डाक पंजीयन नं. 99/2021-23

E-mail:-adhuniksamachar2014@gmail.com

website:www.aadhuniksamachar.com

PG-5

आधुनिक भारत का आधुनिक नजरिया

आधुनिक समाचार

PG-8

प्रयागराज से प्रकाशित हिन्दी दैनिक

सिनेमाः-गाना रब्बा जानता हुआ रिलीज, सिद्धार्थ और रश्मिका की दिखी हॉट केमिस्ट्री

वर्ष -08 अंक -251 | प्रयागराज, मंगलवार, 27 दिसंबर, 2022 | पृष्ठ- 8 | मूल्य : 2.00 रूपये

संक्षिप्त समाचार

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पीएम मोदी से की मुलाकात

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शनिवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से मुलाकात की। दोनों के बीच करीब एक घंटे तक बातचीत हुई। बताया जा रहा है कि योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री को यूपी में होने वाले ग्लोबल इन्वेस्टर समिट में शामिल होने का आमंत्रण दिया है। इस दौरान दोनों के बीच राज्य में हो रहे विकास कार्यों पर भी चर्चा हुई। पीएम

आवास पर हुई मुलाकात की जानकारी मुख्यमंत्री कार्यालय, उत्तर प्रदेश के ट्विटर अकाउंट से भी दी गई। ट्वीट कर कहा गया, 'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने प्रधानमंत्री आवास, नई दिल्ली में शिष्टाचार भेंट की।दरअसल, पीएम मोदी ने सीएम योगी के साथ जी-20 की बैठक को लेकर चर्चा की। प्रधानमंत्री की कोशिश है कि जिन राज्यों में जी-20 की बैठक हो, तो वहां की संस्कृति और पर्यटन स्थलों से प्रतिनिधियों को रूबरू कराया जाए। इसके अलावा, सीएम योगी से प्रधानमंत्री ने राज्य के विकास कार्यों का भी अपडेट जाना। इसके अलावा, दोनों के बीच चुनाव पर चर्चा हुई। उत्तर प्रदेश में हुए उपचुनाव के बाद दोनों की यह पहली मुलाकात है। माना जा रहा है कि दोनों के बीच राज्य में आगे होने वाले निकाय चुनाव को लेकर भी चर्चा हुई है।

व्यक्ति की चाकू से गोदकर हत्या, पुलिस ने लागू की धारा 144; कर्नाटक के सीएम ने की शांति बनाए रखने की अपील

(आधुनिक समाचार सेवा)

मंगलुरु (कर्नाटक)। कर्नाटक के मंगलुरु के बाहरी इलाके कृष्णापुरा में एक व्यक्ति की 25 दिसंबर को चाकू मारकर हत्या कर दी। इसी को देखते हुए अब पुलिस ने 25 दिसंबर को सुबह 6 बजे से 48 घंटे के लिए क्षेत्र में प्रतिबंध लगा दिया है। मंगलुरु सीपी, एन शशि कुमार ने कहा कि हत्या की घटना के मद्देनजर किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए 25 दिसंबर को सुबह 6 बजे से 27 दिसंबर को सुबह 6 बजे तक सुरथकल, बाजपे, कावूर और पानमबुर पीएस सीमा में सीआरपीसी की धारा 144 लागू होगी। कर्नाटक के मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई ने हत्या की घटना पर कहा कि घटना की जांच की जा रही है। पुलिस इस पर आवश्यक कार्रवाई करेगी। लोगों को शांति बनाए रखनी चाहिए। बता दें कि कुछ अज्ञात बदमाशों के एक समूह ने शख्स की हत्या 25 दिसंबर की रात को कर दी थी। पुलिस ने

27 दिसंबर तक शराब की बिक्री पर भी रोक लगाने का आदेश दिया है। पुलिस ने कहा कि घटना 24 दिसंबर की रात की है। मृतक की पहचान जलील के रूप में हुई है और अब तक हमले की पीछे का कारण नहीं पता चल पाया है। जलील पर उस समय चाकू से हमला किया गया जब वह अपनी दुकान के सामने खड़ा था। पुलिस ने कहा कि हमलावर मौके से फरार हो गए है। पीड़ित को तुरंत अस्पताल ले जाया गया लेकिन इलाज के दौरान ही उसकी मौत हो गई। पुलिस आयुक्त एन शशिकुमार ने कहा, 'घायल ने अंतिम सांस ली और अब शव को आगे की प्रक्रिया के लिए एजे अस्पताल भेज दिया गया है।' मंगलुरु शहर के पुलिस आयुक्त ने सीआरपीसी की धारा 144 के तहत सुरथकल, बाजपे, कावूर और पानमबूर पुलिस थानों की सीमा में रविवार, 25 दिसंबर को सुबह 6 बजे से मंगलवार, 27 दिसंबर, सुबह 6 बजे तक निषेधाज्ञा लागू की, ताकि किसी भी अप्रिय घटना को रोका जा सके। पुलिस कमिश्नर ने 27 दिसंबर को सुबह 10 बजे तक शराब की बिक्री पर भी रोक लगाने का भी आदेश दिया।

तमिलनाडु के मदुरै में यात्रियों से भरी मिनी वैन हुई दुर्घटनाग्रस्त

(आधुनिक समाचार सेवा)

मदुरै। तमिलनाडु के मदुरै में एक सड़क हादसा सामने आया है। यहां 24 यात्रियों से भरी मिनी वैन दुर्घटनाग्रस्त हो गई। पुलिस के मुताबिक, तमिलनाडु के मदुरै में 24 यात्रियों को ले जा रही एक मिनी वैन दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बताया जा रहा है कि मिनी वैन यात्रियों को लेकर मदुरै से कुंभकोणम जा रही थी। इसी दौरान ये हादसा हुआ है। पुलिस के मुताबिक, हादसा रात करीब 2 बजे हुआ, जिसके बाद घायलों को इलाज के लिए मदुरै के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घटना के बारे में विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है।

'नमामि गंगे' पहल ने जैव विविधता में सुधार करने में की मदद

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को वर्ष 2022 के अंतिम 'मन की बात' कार्यक्रम में लोगों से अपने मन की बात की। जहां उन्होंने 'नमामि गंगे' अभियान को विश्व के शीर्ष 10 अभियानों के रूप में स्वीकार करने की संयुक्त राष्ट्र की घोषणा का स्वागत किया। पीएम मोदी ने कहा कि इस अभियान से जैवविधिता सुधर रही है और इसका

अन्य क्षेत्रों में भी लाभ मिल रहा है। इसके अलावा, दुनिया द्वारा इसकी व्यापक रूप से सराहना की जा रही है। पीएम मोदी ने अपने रेडियो शो- 'मन की बात' के 96वें संस्करण में मां गंगा के साथ भारत की परंपरा और संस्कृति के अटूट नाते का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि 'नमामि गंगे' पहल के बाद हिमालय से निकलने वाले देश की इस प्रमुख नदी में जल-जीव और मछलियों की संख्या बढ़ रही है। पीएम ने बताया, 'नमामि गंगे मिशन ने जैव विविधता में सुधार करने में भी मदद की है। गंगा जैसी हमारी नदियों को स्वच्छ रखना हमारी पूरी जिम्मेदारी है। गंगा का पारिस्थितिकी तंत्र स्वच्छ होने के साथ, अन्य आजीविका के अवसर भी बढ़ रहे हैं।' पीएम मोदी ने कहा, 'यहां मैं 'जलज आजीविका मॉडल' पर प्रकाश डालना चाहूंगा, जिसे जैव विविधता का सम्मान करने के लिए तैयार किया गया है। क्योंकि हिलसा मछली, गंगा डॉल्फिन और कछुआ की विभिन्न प्रजातियों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।' संयुक्त राष्ट्र द्वारा हाल ही में स्वच्छ गंगा नदी वेक कार्यक्रम को पारिस्थितिकी तंत्र को बहाल करने के लिए दुनिया की शीर्ष 10 पहलों में शामिल किए जाने पर उन्होंने गर्व व्यक्त किया। प्रधानमंत्री मोदी ने कहा, 'हमारी संस्कृति और परंपराओं का मां गंगा से गहरा नाता है। गंगादूत, गंगा प्रहरी का विशेष धन्यवाद, जिन्होंने गंगा के मैदानों में वृक्षारोपण, घाटों की सफाई, गंगा आरती, नुक्कड़ नाटक, पेंटिंग और कविताओं के माध्यम से जागरूकता पैदा करके स्वच्छता और स्वच्छता के लिए योगदान दिया। यह पुरस्कार नमामि गंगे परियोजना के महानिदेशक जी. अशोक कुमार ने 15 दिसंबर को विश्व बहाली दिवस पर मॉन्ट्रियल, कनाडा में जैव विविधता पर सम्मेलन (सीबीडी) के पक्षकारों के 15वें सम्मेलन (सीओपी15) में एक समारोह के दौरान प्राप्त किया।

साल के आखिरी मन की बात एपिसोड में पीएम मोदी बोले

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आज वर्ष 2022 में अंतिम बार लोगों के साथ मन की बात कर रहे हैं। मन की बात के अपने 96वें एपिसोड

में पीएम ने साल 2022 में भारत की विकास यात्रा के बारे में बात की। पीएम ने कहा कि यह साल हर क्षेत्र में भारत के विकास की गाथा लिखने का साल है। पीएम ने कहा वर्ष 2022 में भारत का बोलबाला दुनिया में दिखा। पीएम ने इसी के साथ लोगों से कोरोना के खिलाफ सावधानी बरतने को कहा। पीएम मोदी ने मन की बात में कहा कि साल 2022 कई मायनों में प्रेरक और अद्भुत रहा। इस साल भारत ने आजादी के 75 साल पूरे किए और इसी साल अमृत काल का प्रारंभ हुआ। पीएम ने कहा कि आजादी के 75 वर्ष को मनाने के तिरंगा अभियान में भारत में एकजुटता दिखी और पूरा देश तिरंगामय हो गया। मोदी ने कहा कि 6 करोड़ से ज्यादा लोगों ने तिरंगे के साथ सेल्फी भी ली। पीएम ने कहा कि मां गंगा की सफाई के लिए सभी लोगों को आगे आना होगा। सरकार द्वारा गंगा की सफाई के लिए चलाए गए नमामि गंगे मिशन ने जैव विविधता में सुधार करने में भी मदद की है।

राष्ट्रपति मुर्मु का दक्षिण भारत दौरा आज से, कई कार्यक्रमों में लेंगी हिस्सा छात्रों से भी करेंगी बातचीत

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु आज (सोमवार) से पांच दिवसीय दक्षिण भारत के दौरे पर रहेंगी। राष्ट्रपति मुर्मु सबसे पहले हैदराबाद पहुंचेंगी। राष्ट्रपति मुर्मु हैदराबाद के सिकंदराबाद के बोलारम में निलयम में रुकेंगी। राष्ट्रपति सचिवालय के मुताबिक, राष्ट्रपति मुर्मु 26 दिसंबर को आंध्र प्रदेश के

श्रीशैलम मंदिर जाएंगी और केंद्रीय पर्यटन मंत्रालय की प्रसाद योजना के तहत श्रीशैलम मंदिर के विकास से जुड़ी परियोजनाओं का उद्घाटन करेंगी। बता दें कि जुलाई 2022 में राष्ट्रपति पद के लिए चुने जाने के बाद से मुर्मु की हैदराबाद की यह पहली यात्रा होगी। अपने पांच दिवसीय प्रवास के दौरान वह रामप्पा और भद्राचलम मंदिरों के दर्शन करेंगी, इसके अलावा राष्ट्रपति मुर्मु शहर में स्थानीय रूप से आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेंगी तेलंगाना सरकार ने राष्ट्रपति के ठहरने के लिए व्यापक इंतजाम किए हैं। पुख्ता सुरक्षा के लिए सुरक्षा एजेंसियों ने राष्ट्रपति निलयम को अपने नियंत्रण में ले लिया है। सेना, पुलिस, राजस्व और अन्य विभागों ने राष्ट्रपति के यहां आने और उनके ठहरने की व्यवस्था की है मुख्य सचिव सोमेश कुमार ने राष्ट्रपति के दौरे की तैयारियों की समीक्षा के लिए विभिन्न विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की। उन्होंने ग्रेटर हैदराबाद नगर निगम (जीएचएमसी) और छावनी को सड़क मरम्मत कार्य और बैरिकेडिंग करने का निर्देश दिया है, ताकि राष्ट्रपति निलयम में यातायात सुचारु रूप से चल सके। उन्होंने बिजली विभाग को 24 घंटे बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने, चिकित्सा विभाग को मेडिकल टीम तैनात करने और अन्य विभागों को प्रोटोकॉल के अनुसार राष्ट्रपति निलयम में व्यवस्था करने के निर्देश भी दिए बता दें कि राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 27 दिसंबर को शहर के केशव मेमोरियल स्कूल जाएंगी और छात्रों से बातचीत करेंगी। वह रंगारेड्डी जिले के काना शांति वनम में श्री रामचंद्र मिशन द्वारा फतेहपुर के श्री रामचंद्रजी महाराज के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आयोजित 'हर दिल ध्यान, हर दिन ध्यान' अभियान की पट्टिका के अनावरण में भी भाग लेंगी। वह हैदराबाद में मिश्रा धातु निगम लिमिटेड (मिधानी) की वाइड प्लेट मिल का भी उद्घाटन करेंगी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु 28 दिसंबर को श्री सीताराम चंद्र स्वामीवरी देवस्थानम, भद्राचलम का दौरा करेंगी। इसके अलावा 29 दिसंबर को राष्ट्रपति हैदराबाद में जी नारायणम्मा इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड साइंस के छात्रों के साथ बातचीत करेंगी। उसी दिन वह श्रीरामनगरम, शमशाबाद में स्टैच्यू ऑफ इक्वैलिटी का भी दौरा करेंगी। 30 दिसंबर को राष्ट्रपति मुर्मु दिल्ली वापस लौटेंगा उल्लेखनीय है कि राष्ट्रपति साल में कम से कम एक बार राष्ट्रपति निलयम में रुकते हैं और यहीं से आधिकारिक कामकाज करते हैं। इसका निर्माण 1860 में सिकंदराबाद में ब्रिटिश रेजिडेंट के कंट्री हाउस के रूप में किया गया था। 1948 में हैदराबाद राज्य के भारत में विलय के बाद यह राष्ट्रपति का आवास बन गया। हैदराबाद के तत्कालीन राज प्रमुख मीर उस्मान अली खान ने 14 अगस्त, 1955 को आधिकारिक रूप से राष्ट्रपति निलयम को सरकार को सौंप दिया था। इस प्रकार यह दिल्ली में राष्ट्रपति भवन और शिमला में राष्ट्रपति निवास के बाद राष्ट्रपति का तीसरा आधिकारिक निवास बन गया है।

चीन में फैल रहे कोरोना के बावजूद भारत में क्रिसमस पर नहीं कोई पाबंदी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। आज क्रिसमस का दिन है। हर जगह लोग इसे धूम-धाम से सेलिब्रेट कर रहे हैं। इन दिनों चीन में कोरोना के मामलों में लगातार बढ़ोतरी देखी जा रही है। फिर भी भारत में इस साल क्रिसमस

बिना किसी पाबंदी के मनाया जा रहा है। हमारे देश में इस खतरनाक बीमारी को लेकर अभी भी चिंता बनी हुई है। माना जा रहा है कि देश में आबादी का लगभग पांचवां हिस्सा वायरस की चपेट में है और वह 2022 के आखिरी महीने में ही संक्रमित हुआ है। इस समय बीएफ7, जो ओमिक्रॉन का सब-वेरिएंट है, वह दुनिया भर में तेजी से फैल रहा है। पड़ोसी देश में लाखों लोग इससे प्रभावित हैं, जिसको देखते हुए भारत में अधिकारियों ने सावधानी बरतने की सलाह दी है। कोई पाबंदी नहीं है लेकिन मास्क पहनने और कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने के लिए रिमाइंडर भेजे जा रहे हैं। . चीन में बढ़ते कोरोना के मामले को देखते हुए भारत ने शनिवार को चीन, थाईलैंड, जापान, सिंगापुर और दक्षिण कोरिया से आने वाले यात्रियों के लिए आरटी-पीसीआर टेस्ट नियम को फिर से अनिवार्य कर दिया है। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री मनसुख मंडाविया ने कहा कि अगर इन देशों से यात्रा करने वाले यात्रियों में कोविड के लक्षण दिखाई देते हैं, तो उन्हें क्वारंटाइन में रखा जाएगा। . मेडिकल ऑक्सीजन हर समय उपलब्ध हो यह सुनिश्चित करने के लिए केंद्र सरकार ने राज्यों के लिए एक नई एडवाइजरी भी जारी की है। कई देशों ने महामारी के दो वर्षों में सबक सीखे है जब उस समय चिकित्सा ऑक्सीजन की कमी थी और अस्पताल दबाव में थे।

पाकिस्तान और चीन के लिए 'प्रलय' को रोकना होगा मुश्किल रक्षा मंत्रालय ने तैनाती को दी मंजूरी

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने भारतीय सशस्त्र बलों के लिए लगभग 120 'प्रलय' बैलिस्टिक मिसाइलों की खरीद को मंजूरी दे

दी है। इन मिसाइलों को चीन और पाकिस्तान की सीमाओं पर तैनात किया जाएगा। वर्तमान में प्रलय बैलिस्टिक मिसाइलें 150 से 500 किलोमीटर तक के लक्ष्य को भेद सकती हैं। इंटरसेप्टर मिसाइलों के माध्यम से दुश्मन के लिए इसे रोकना बेहद मुश्किल होगा। वरिष्ठ रक्षा सूत्रों ने बताया, 'रक्षा मंत्रालय की एक उच्च स्तरीय बैठक में सशस्त्र बलों के लिए लगभग 120 मिसाइलों के अधिग्रहण और सीमाओं पर उनकी तैनाती को मंजूरी दे दी गई है।' इन बैलिस्टिक मिसाइलों के अधिग्रहण को देश के लिए एक बड़े विकास के रूप में देखा जा रहा है, जिसकी अब ऐसी नीति है, जो सामरिक भूमिकाओं में बैलिस्टिक मिसाइलों के उपयोग की अनुमति देती है। चीन और पाकिस्तान दोनों के पास बैलिस्टिक मिसाइलें हैं, जो सामरिक भूमिकाओं के लिए हैं। सूत्रों ने कहा कि रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन द्वारा विकसित मिसाइल को और विकसित किया जा रहा है और अगर सेना चाहे तो इसकी सीमा को काफी बढ़ाया जा सकता है। 2015 के आसपास मिसाइल प्रणाली का विकास होना शुरू हुआ और इस तरह की क्षमता के विकास को दिवंगत जनरल बिपिन रावत ने थल सेनाध्यक्ष के रूप में बढ़ावा दिया। इस मिसाइल का पिछले साल 21 दिसंबर और 22 दिसंबर को लगातार दो बार सफल परीक्षण किया गया था। प्रलय' एक अर्ध-बैलिस्टिक सतह से सतह पर मार करने वाली मिसाइल है। इंटरसेप्टर मिसाइलों को हराने में सक्षम होने के लिए उन्नत मिसाइल को एक तरह से विकसित किया गया है। यह मध्य हवा में एक निश्चित सीमा तय करने के बाद अपना रास्ता बदलने की क्षमता रखती है। 'प्रलय' एक ठोस प्रणोदक रॉकेट मोटर और अन्य नई तकनीकों द्वारा संचालित है। इस मिसाइल को सबसे पहले भारतीय वायु सेना में शामिल किया जाएगा। प्रस्ताव को रक्षा मंत्रालय के स्तर पर मंजूरी दे दी गई है। रक्षा विशेषज्ञों का कहना है कि इस तरह की मिसाइल प्रणाली का इस्तेमाल लंबी दूरी की दुश्मन वायु रक्षा प्रणालियों और अन्य उच्च मूल्य वाले प्रतिष्ठानों और हथियारों को नष्ट करने के लिए किया जा सकता है इन मिसाइलों को शामिल करने के प्रस्ताव को ऐसे समय में मंजूरी दी गई है, जब रक्षा बल एक समर्पित रॉकेट बल बनाने की दिशा में काम कर रहे हैं, जो लंबी दूरी से दुश्मन के ठिकानों को नष्ट कर सके। चीनी सेना के पास पहले से ही समर्पित रॉकेट फोर्स है।

पूर्व मंत्री जनार्दन रेड्डी ने बनाई अपनी नई पार्टी, लड़ेंगे 2023 का विधानसभा चुनाव

(आधुनिक समाचार सेवा)

बेंगलुरु। कर्नाटक के पूर्व मंत्री और खनन माफिया जी जनार्दन रेड्डी ने रविवार को ''कल्याण राज्य

प्रगति पक्ष'' नाम से अपनी नई राजनीतिक पार्टी की घोषणा की। इसके साथ ही उन्होंने अब बीजेपी से अपना दो दशक पुराना रिश्ता तोड़ लिया है। बता दें कि रेड्डी अवैध खनन के कई मामलों में आरोपी हैं। कर्नाटक की चुनावी राजनीति में फिर से प्रवेश करते हुए, उन्होंने यह भी घोषणा की कि वह कोप्पल जिले के गंगावती से 2023 का विधानसभा चुनाव लड़ेंगे। रेड्डी ने कहा, 'बीजेपी नेताओं के यह कहने के बावजूद कि मैं पार्टी का सदस्य नहीं हूं और पार्टी से मेरा कोई संबंध नहीं है, राज्य और इसके लोगों का मानना था कि मैं उस पार्टी से हूं, यह धारणा अब जाकर गलत साबित हुई है।

पाक सीमा पर रक्षा बुनियादी ढांचे में सुधार कर रहा भारत

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। अधिकारियों ने कहा कि भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने पाकिस्तान के साथ अंतरराष्ट्रीय सीमा पर सेना के टैंकों के लिए रैंप बनाने और बीएसएफ बंकरों को मजबूत करने सहित एक प्रमुख रक्षा बुनियादी ढांचे में सुधार किया है। आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि बुनियादी ढांचे के नवीनीकरण और कुछ नए निर्माण का पहला चरण हाल ही में जम्मू में फ्रंट के साथ 26 किलोमीटर की दूरी पर पूरा किया गया है, जबकि इसी क्षेत्र में 33 किलोमीटर का एक और काम किया जा रहा है। जम्मू भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा की कुल दूरी 2,289 किलोमीटर में से 192 किमी लंबी सीमा को साझा करता है। दोनों पड़ोसियों के बीच नियंत्रण रेखा (एलओसी) प्रमुख रूप

से कश्मीर में पड़ती है और यह करीब 772 किलोमीटर लंबी है। किए गए रक्षा बुनियादी ढांचे के काम में कई डीसीबी (खाई-सह-बंद) का निर्माण और पुनरुद्धार, क्षतिग्रस्त सीमा बाड़ का रखरखाव, आगे के क्षेत्रों में सेना के टैंकों की आवाजाही के लिए रैंप का निर्माण, निगरानी और अन्य सुरक्षा तंत्र की स्थापना के लिए सीमा सुरक्षा बल 'मोर्चा' (सैन्य चौकियों), बंकरों और स्थानों का उन्नयन शामिल है। केंद्रीय गृह मंत्रालय से प्राप्त धन के माध्यम से यह काम किया जा रहा है। दअधिकारियों ने कहा कि भारत और पाकिस्तान द्वारा 20 फरवरी, 2021 को जम्मू और कश्मीर में मोर्चे पर अपने संघर्ष विराम समझौते को नवीनीकृत करने के बाद इन कार्यों को शुरू किया गया और पहला चरण (26 किलोमीटर पर) पूरा किया गया। बीएसएफ के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, 'दूसरा पक्ष भी इसी तरह का काम कर रहा है।

प्रयागराज में डिवाइडर से टकराकर पलटा पपीतों से भरा ट्रक

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। शहर में सोमवार सुबह पपीतों से भरा ट्रक पोंघुट पुल के पास डिवाइडर

से टकराकर बीच सड़क पर पलट गया घटना। हादसे में कोई हताहत नहीं हुआ। लेकिन घंटों तक वहां ट्रैफिक जाम लगा रहा। बताया जा रहा है कि ट्रक कानपुर से मुंडेरा मंडी जा रहा था। तभी रास्ते में कोहरे के कारण ड्राइवर डिवाइडर से टकराकर गाड़ी पर संतुलन खो बैठा और ट्रक डिवाइडर से जा टकराया। इसके बाद वह बीच सड़क पर ही पलट गया सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। ट्रक को बीच सड़क से हटाने का काम जारी है।

भाजपा विधायक पर भड़की हेडमास्टर बिन अनुमति करा रहे थे विद्यालय में कार्यक्रम; बीएसए ने किया सस्पेंड

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। नैनी के उच्च प्राथमिक विद्यालय परिसर में बिना अनुमति के अटल बिहारी वाजपेयी जयंती

कार्यक्रम आयोजित करने पर महिला हेडमास्टर मुख्य अतिथि भाजपा विधायक पीयूष रंजन पर बरस पड़ीं। उनका गुस्सा देखकर विधायक हाथ जोड़कर उन्हें समझाने की कोशिश रहते रहे। लेकिन, वह नही मानी और पुलिस बुला ली। घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। हेडमास्टर कार्यक्रम के बीच में विद्यालय पहुंच गई थीं। वह विधायक से पूछती रही कि आप बिना उनकी अनुमति स्कूल में कैसे कार्यक्रम करा रहे हैं? पर विधायक हाथ जोड़ विनती करते रहे। कार्यकर्ता बताते रहे की विद्यालय के साथ ही परिसर पंचायत भवन का भी है। पर वह टस से मस नहीं हुईं। हंगामे के बीच महिला हेडमास्टर से कार्यकर्ता ने कहा कि आप जो कर रही हैं, वह ठीक नहीं है। आपको सस्पेंड होने में देर नहीं लगेगी। इस पर वह और भड़क गईं। कहा कि मेरी सुनिए। ब्रह्मा कोई नहीं है। सस्पेंड कराकर मेरी जान नहीं ले लेंगे। इस पर विधायक ने कहा कि आप गलत बोल रही हैं। फिर विधायक को रोकते हुए हेडमास्टर ने कहा कि मैं सही बात बोलती हूं, इसीलिए आपकी नजर में गलत हूं। हेडमास्टर ने कहा कि आपको मुझे सूचना तो देनी चाहिए थी। मंच से यही बोल दिए होते कि मैडम आप भी बैठ जाइए। आपको सूचना देना भूल गए। माफी मांग लेते। मैं प्रिंसिपल हूं यहां की। क्या मेरा कोई औचित्य ही नहीं है हंगामा बढ़ता देख विधायक ने डीएम संजय खत्री को फोन कर मामले की जानकारी दी। उन्होंने बेसिक शिक्षा अधिकारी यानी प्रवीण कुमार तिवारी को मौके पर भेजा। बीएसए ने तत्काल प्रभाव से महिला हेडमास्टर को सस्पेंड कर दिया।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला उद्योग बन्धु तथा व्यापार बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। जिलाधिकारी संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में जिला उद्योग बन्धु तथा व्यापार बंधु समिति की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को उद्यमियों एवं व्यापारियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि उद्योग धंधों को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। बैठक में जिलाधिकारी ने व्यापारियों की समस्याओं को सुनते हुए उनकी समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित किए जाने के निर्देश सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को दिए है। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को जर्जर तारों, खम्भों, स्ट्रीट लाइटों सहित अन्य समस्याओं/शिकायतों को 10 दिनों के अंदर ठीक कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने बिजली विभाग के अधिकारियों को ट्रासफार्मरों को जाली के अंदर लगाये जाने के लिए कहा है, जिससे कि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। उन्होंने खराब हो चुके बिजली के खम्भों की सूची उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिए है। व्यापारियों के द्वारा झूंसी अंदावा चैराहे से निष्ठा हॉस्पिटल तक पानी के निकास की समुचित व्यवस्था न होने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने लोक निर्माण

विभाग, नगर निगम की टीम को स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट देने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने नगर निगम को बाजारों में नियमित रूप से साफ-सफाई की व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने व्यापारी बंधुओं से प्लास्टिक का प्रयोग न करने के लिए कहा है। कहा कि बाजारों में इधर-उधर वाहनों के खड़े रहने से लगातार जाम की समस्या आती है, आप लोग अपने स्तर से यह देख ले कि गाड़ी सही जगह पर खड़ी की जाये, जिससे कि जाम न लगे। जिलाधिकारी ने उद्योग बंधुओं के साथ बैठक करते हुए मे0 भार्गव पैकटेक, इण्डियन प्रेस, कर्नलगंज से सम्बंधित प्रकरण के निराकरण के बारे में जानकारी लिए जाने पर विद्युत विभाग खण्ड टैगोर टाउन के अधिशाषी अभियांता द्वारा बताया गया कि टीम का गठन कर दिया गया है और जल्द से जल्द प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा। इसी प्रकार मे0 तरूण इण्टरप्राइजेज, शेड नं0 20 एनएसआईसी नैनी द्वारा जमा धनराशि विद्युत विभाग द्वारा रिफंड न किये जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग खण्ड नैनी के अधिशाषी अभियंता को एक सप्ताह के अंदर मामले का निस्तारण सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिए है। बैठक में मे0 त्रिवेणी इलेक्ट्रोप्लास्ट प्रा0लि0 के प्रकरण में आईटीआई नैनी के प्राचार्य को प्रशिक्षण का पैसा दिलाये जाने के सम्बंध में आवश्यक कार्यवाही किए जाने के लिए कहा है। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना एवं एक जनपद एक उत्पाद मार्जिनमनी योजना से सम्बंधित बैंको में लम्बित प्रकरणों को 10 दिनों में निस्तारण कराते हुए उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। इस अवसर पर उपायुक्त उद्योग, उपायुक्त वाणिज्यकर सहित उद्योग बंधु से श्री मुरारी लाल अग्रवाल, संतोष त्रिपाठी सहित अन्य उद्यमीगण/व्यापारीगण उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कोविड प्रबंधन के सम्बन्ध में बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। जिलाधिकारी ने सर्विलांस टीमो, मोबाइल सैम्पलिग टीमो, रैपिड रिस्पांस टीमो को क्रियाशील बनाये रखने तथा एम्बुलेंस को चिन्हित

टीमो, रैपिड रिस्पांस टीमो को क्रियाशील बनाये रखने के दिये निर्देश अस्पतालो में सभी आवश्यक व्यवस्थाये सुनिश्चित बनाये रखने के दिये निर्देश जिलाधिकारी मे जन जागरूकता अभियान चलाये जाने के दिये निर्देश 27 दिसम्बर, 2022 प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में कोविड प्रबंधन के सम्बन्ध में बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी को सर्विलांस टीमो, मोबाइल सैम्पलिग टीमो, रैपिड रिस्पांस टीमो को क्रियाशील बनाये रखने तथा एम्बुलेंस को चिन्हित किये जाने के लिए कहा। उन्होंने स्वरूप रानी एवं बेली अस्पतालो में 100-100 बेड आरक्षित किये जाने के लिये कहा है। जिलाधिकारी ने मंगलवार को होने वाले कोविड मॉकडिल के समय कोविड के लिये चिन्हित किये गये अस्पतालो मे दवाओ, कंसनट्रेटर, बेंटीलेटर सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं की जाच किये जाने के लिये कहा है, साथ ही साथ उन्होंने आक्सीजन प्लांटो की क्रियाशीलता की भी जाच करने के लिये कहा है।

जिलाधिकारी ने मुण्डेरा मण्डी में बनाये गये जैविक बाजार का किया निरीक्षण, दिए आवश्यक दिशा-निर्देश

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री ने सोमवार को मुण्डेरा मण्डी में बनाये गये जैविक बाजार का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उप निदेशक कृषि ने जिलाधिकारी को अवगत कराते हुए बताया कि जैविक बाजार में जनपद के किसानों के द्वारा उगायी

जा रहे जैविक सब्जियों एवं अन्य उत्पादों को किसानों से खरीद कर विक्रय किया जायेगा। इसके लिए वेण्डर का चयन किया जा रहा है। जिलाधिकारी ने उप निदेशक कृषि को निर्देशित करते हुए कहा है कि वेण्डर के द्वारा होने वाली समस्त कार्रवाईयां पूरी पारदर्शिता के साथ सुनिश्चित की जाये तथा किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिलें। उन्होंने इसका व्यापक प्रचार-प्रसार कराये जाने के लिए कहा है, जिससे लोगो को जानकारी हो सके और अधिक से अधिक लोग जैविक ढंग से उत्पादन की जाने वाली सब्जियों एवं अनाजों को खरीद सके और ऐसे किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके। जिलाधिकारी ने वहां पर जैविक बाजार के लिए बनाये गये कक्षों, प्लेटफार्म सहित प्रवेश एवं निकास सहित अन्य व्यवस्थाओं को देखा। उन्होंने मण्डी सचिव को मण्डी में साफ-सफाई तथा अन्य सभी व्यवस्थायें चुस्त-दूरूस्त बनाये जाने के निर्देश दिये है। इस अवसर पर उप निदेशक कृषि श्री विनोद कुमार, मण्डी विभाग के अधिकारीगण सहित अन्य सम्बंधित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में जिला उद्योग बन्धु तथा व्यापार बन्धु समिति की बैठक सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। जिलाधिकारी श्री संजय कुमार खत्री की अध्यक्षता में सोमवार को संगम सभागार में जिला उद्योग बन्धु तथा व्यापार बंधु समिति

की बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को उद्यमियों एवं व्यापारियों की समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित करने के निर्देश दिए है। उन्होंने कहा कि उद्योग धंधों को बढ़ावा देना सरकार की प्राथमिकता है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही या उदासीनता स्वीकार्य नहीं है। बैठक में जिलाधिकारी ने व्यापारियों की समस्याओं को सुनते हुए उनकी समस्याओं को शीर्ष प्राथमिकता पर निस्तारित किए जाने के निर्देश सम्बंधित विभागों के अधिकारियों को दिए है। उन्होंने विद्युत विभाग के अधिकारियों को जर्जर तारों, खम्भों, स्ट्रीट लाइटों सहित अन्य समस्याओं/शिकायतों को 10 दिनों के अंदर ठीक कराये जाने के लिए कहा है। उन्होंने बिजली विभाग के अधिकारियों को ट्रासफार्मरों को जाली के अंदर लगाये जाने के लिए कहा है, जिससे कि किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचा जा सके। उन्होंने खराब हो चुके बिजली के खम्भों की सूची उपलब्ध कराये जाने के निर्देश दिए है। व्यापारियों के द्वारा झूंसी अंदावा चैराहे से निष्ठा हॉस्पिटल तक पानी के निकास की समुचित व्यवस्था न होने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने लोक निर्माण विभाग, नगर निगम की टीम को स्थलीय निरीक्षण कर रिपोर्ट देने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने नगर निगम को बाजारों में नियमित रूप से साफ-सफाई की व्यवस्था बनाये रखने के निर्देश दिए है। उन्होंने व्यापारी बंधुओं से प्लास्टिक का प्रयोग न करने के लिए कहा है। कहा कि बाजारों में इधर-उधर वाहनों के खड़े रहने से लगातार जाम की समस्या आती है, आप लोग अपने स्तर से यह देख ले कि गाड़ी सही जगह पर खड़ी की जाये, जिससे कि जाम न लगे। जिलाधिकारी ने उद्योग बंधुओं के साथ बैठक करते हुए मे0 भार्गव पैकटेक, इण्डियन प्रेस, कर्नलगंज से सम्बंधित प्रकरण के निराकरण के बारे में जानकारी लिए जाने पर विद्युत विभाग खण्ड टैगोर टाउन के अधिशाषी अभियांता द्वारा बताया गया कि टीम का गठन कर दिया गया है और जल्द से जल्द प्रकरण का निस्तारण कर दिया जायेगा। इसी प्रकार मे0 तरूण इण्टरप्राइजेज, शेड नं0 20 एनएसआईसी नैनी द्वारा जमा धनराशि विद्युत विभाग द्वारा रिफंड न किये जाने की शिकायत की गयी, जिसपर जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग खण्ड नैनी के अधिशाषी अभियंता को एक सप्ताह के अंदर मामले का निस्तारण सुनिश्चित कराये जाने के निर्देश दिए है। बैठक में मे0 त्रिवेणी इलेक्ट्रोप्लास्ट प्रा0लि0 के प्रकरण में आईटीआई नैनी के प्राचार्य को प्रशिक्षण का पैसा दिलाये जाने के सम्बंध में आवश्यक कार्यवाही किए जाने के लिए कहा है। मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना एवं एक जनपद एक उत्पाद मार्जिनमनी योजना से सम्बंधित बैंको में लम्बित प्रकरणों को 10 दिनों में निस्तारण कराते हुए उसकी रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए कहा है। इस अवसर पर उपायुक्त उद्योग, उपायुक्त वाणिज्यकर सहित उद्योग बंधु से श्री मुरारी लाल अग्रवाल, संतोष त्रिपाठी सहित अन्य उद्यमीगण/व्यापारीगण उपस्थित रहे।

परीक्षक कमेटी में भारतीय जनता युवा मोर्चा के वरिष्ठ पदाधिकारी एवं जिले में भाजपा के वरिष्ठ पदाधिकारी सम्मिलित रहेंगे

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। प्रतिभागियों को 4 विषयों में से किसी एक विषय को चुनकर बोलना होगा। 1)श्री नरेंद्र मोदी जी का डिजिटल इंडिया गुड गवर्नेंस पर जोर देता है। 2) भारत 5 ट्रिलियन अर्थव्यवस्था की ओर अग्रसर है। 3) समय की मांगः मुफ्त खोरी की राजनीति से विकास की राजनीति की ओर स्थानांतरण। 4) श्री नरेंद्र मोदी जी की सरकार का ध्यान युवाओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित है। प्रतिभागी उपरोक्त 4 में से किसी भी विषय को चुन सकते हैं। अच्छा प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को निम्नलिखित पुरस्कार मिलेंगेः सहभागिता प्रमाण पत्र, भाजयुमो सुशासन यात्रा के लिए नामांकन, भाजयुमो उन्नत प्रशिक्षण शिविर में भाग लेने का अवसर, देशभर में भाजयुमो आयोजनों में बोलने का निमंत्रण, भाजयुमो द्वारा विश्वविद्यालय परिचर्चा में बोलने का निमंत्रण, स्थानीय चुनाव प्रचार में बोलने का अवसर, अटल डिबेटिंग क्लब की सदस्यता। कार्यक्रम में भाजयुमो जिला उपाध्यक्ष नवीन मिश्रा, नरेंद्र जोगी,सुशील कुमार, निशु जोगी ,विक्की इत्यादि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

6 माह में तैयार हो जाएगा यूपी और एमपी को जोड़ने वाला पुल

(आधुनिक समाचार सेवा)
प्रयागराज। नारीबारी से कोरांव स्टेट हाईवे पर मवैया गांव के पास टोंस नदी पर बन रहे पुल का काम

लगभग छह माह में पूरा हो जाएगा। उप्र राज्य सेतु निगम की ओर से यह पुल लगभग 63 करोड़ रुपये से बनाया जा रहा है। इस पुल के बनने से उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के लगभग दो सौ गांवों के लोगों को आवागमन में सहूलियत होगा निर्माणाधीन पुल के बगल में 1952 में बना ब्रिज जर्जर हो चुका है, जिस पर भारी वाहनों का आवागमन दो साल से रोका गया है। इसके कारण लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। खासतौर पर किसानों को ट्रैक्टर ट्राली व अन्य वाहन ले जाने में लगभग 30 किमी की अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ती है। अब यह परेशानी छह माह में दूर हो जाएगी। 11 दिसंबर 2020 को शुरू हुआ था काम निर्माणाधीन पुल जून में तैयार हो जाएगा और जुलाई में इस पर आवागमन शुरू करा दिया जाएगा। लगभग 719 मीटर लंबे इस पुल का काम 11 दिसंबर 2020 को शुरू हुआ था। इस पुल के बनने से शंकरगढ़, बारा, जसरा, कौंधियारा, कोरांव, नारीबारी, लेड़ियारी, खीरी क्षेत्र के गांवों के साथ ही मध्य प्रदेश के रीवा जनपद के गांवों के लोगों को आने-जाने में सुविधा होगी।

काशी विद्यापीठ का 44वां दीक्षांत समारोह 31 को, केवल गोल्ड मेडलिस्ट को मिलेगा प्रवेश

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के 44वें दीक्षांत समारोह में केवल गोल्ड मेडलिस्ट को ही उपाधि दी जाएगी। स्नातक के 16, परास्नातक के 43 विद्यार्थियों को 59 पदक मिलेंगे। इसके अलावा दो उत्कृष्ट खिलाड़ी, बीए संस्कृत में सर्वोच्च अंक पाने वाले, एक स्नातक और एक परास्नातक में सर्वोच्च अंक पाने वाले विद्यार्थी को गोल्ड मेडल प्रदान किया जाएगा। इसके साथ ही कोविड प्रोटोकॉल के साथ ही दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी कुलपति प्रो. आनंद कुमार त्यागी ने सोमवार को प्रशासनिक भवन में प्रेसवार्ता में दी। कुलपति प्रो. त्यागी ने बताया कि कोरोना के संक्रमण को देखते हुए कोविड प्रोटोकॉल के साथ ही दीक्षांत समारोह का आयोजन किया जाएगा। नो मास्क नो इंट्री के नियम को सख्ती से पालन कराया जाएगा। विद्यार्थियों के साथ एक ही अभिभावक को अनुमति इसके साथ ही स्वर्ण पदक धारियों को एक सीट छोड़कर ही बैठने का इंतजाम किया जाएगा। विद्यार्थियों के साथ एक ही अभिभावक को प्रवेश की अनुमति मिलेगी। कोविड हेल्प डेस्क भी सक्रिय किया जाएगा और इस पर स्वास्थ्यकर्मी तैनात रहेंगे। दीक्षांत समारोह का होगा लाइव प्रसारण इसके अलावा अभिभावकों के लिए समाजकार्य संकाय के राजाराम शास्त्री सभागार में स्क्रीन लगाकर लाइव प्रसारण किया जाएगा। परिसर में लगी दो डिस्प्ले बोर्ड पर भी दीक्षांत का लाइव प्रसारण किया जाएगा। कुलपति ने बताया कि दीक्षांत समारोह का रिहर्सल 30 दिसंबर को किया जाएगा और मुख्य समारोह 31 दिसंबर को गांधी अध्ययन पीठ सभागार में होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय विश्वविद्यालय महेंद्रगढ़ हरियाणा के कुलपति प्रो. टंकेश्वर कुमार होंगे। टॉप-10 विद्यार्थियों को 29 दिसंबर से बंटेंगी उपाधियां परीक्षा नियंत्रक प्रो. बीडी पांडेय ने बताया कि स्नातक में 55 हजार 61 और परास्नातक में 30 हजार 131 विद्यार्थियों को डिग्री दी जाएगी।

श्रीकाशी विश्वनाथ मंदिर पहुंचे अभिनेता गोविंदा पत्नी सुनीता संग बाबा दरबार में टेका मत्था

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। धर्म की नगरी काशी में ?फिल्म अभिनेता? एवं पूर्व राजनेता गोविंदा अपनी पत्नी सुनीता के साथ सोमवार को बाबा विश्वनाथ के दरबार में हाजिरी लगाई। बाबा विश्वनाथ का विधि-विधान से दर्शन-पूजन किया। बाबा का षोडशोपचार पूजन किया। इस अवसर पर गोविंदा और उनकी पत्नी को मंदिर की ओर से रुद्राक्ष की माला, अंगवस्त्रम और प्रसाद भेंट किया गया। श्रीकाशी विश्वनाथ धाम को देख मंत्र मुग्ध हुए गोविंदा बाबा का आशीर्वाद लेने के बाद गोविंदा

इसके अलावा गोविंदा ने पत्नी संग मां अन्नपूर्णा के दरबार में शीश नवाकर? ?आशीर्वाद लिया। विधि-विधान से किया बाबा विश्वनाथ का पूजन गोविंदा रविवार को सबसे पहले ?काशी विश्वनाथ धाम मंदिर पहुंचे। सोमवार का दिन होने के चलते मंदिर में श्रद्धालुओं की भीड़ भी रही। गोविंदा को अपने बीच देख समर्थक भी खुश नजर आए। गोविंदा ने भी समर्थकों का अभिवादन किया। इस दौरान गोविंदा ने परंपरानुसार विश्वनाथ धाम में विधि-विधान से ने भव्य, दिव्य और नव्य धाम की सुंदरता भी निहारी। बाबा दरबार की स्वर्णमयी भव्यता को देखकर गोविंदा मंत्र मुग्ध नजर आए। बाबा दरबार की महिमा और दिव्यता का बखान करते हुए अपनी यात्रा का उद्देश?य निजी तौर पर बताया। कहा कि वह बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए आए हैं।अभिनेता गोविंदा अपनी पत्नी सुनीता के साथ माता अन्नपूर्णा के दरबार में भगवती का आशीर्वाद लिया। वहां मंदिर अर्चक ने प्रसाद के रूप में चुनरी दिया।

नैनो कार और बुलेट की टक्कर में एक की मौत, दो घायल, बेटी की शादी तय करने जा रहा था पिता

(आधुनिक समाचार सेवा)

गोरखपुर। गोरखपुर जिले के महोब बगानी गांव निवासी अर्जुन सिंह (46) अफने रिश्तेदार के साथ बुलेट से आजमगढ़ आ रहे थे। जीयनपुर कोतवाली क्षेत्र के धनछुला जमीन हरखोरी गांव के पास नैनो कार से बुलेट टकरा गई। हादसे में अर्जुन सिंह की मौत हो गई। यूपी के आजमगढ़ जिले में सोमवार सुबह नैनो कार और बुलेट की आमने-सामने से टक्कर हो गई। हादसे में बुलेट सवार व्यक्ति की मौत हो गई तो वहीं नैनो कार चालक दो लोग घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती कराने के साथ शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। सड़क हादसे में जान गंवाने वाला शख्स बेटी की शादी तय करने के लिए घर से निकला था। हादसे की सूचना के बाद से परिजनों में कोहराम मचा है। गोरखपुर जिले के बेलीपार थाना अंतर्गत कबानी खुर्द महोब बगानी गांव निवासी अर्जुन सिंह (46) सोमवार सुबह परिवार के ही अभिनय सिंह (22) के साथ आजमगढ़ जिला मुख्यालय के लिए चले थे। वे अपनी पुत्री की शादी के सिलसिले में आजमगढ़ आ रहे थे। नैनो कार को चला रहे थे एसोसिएट प्रोफेसर जीयनपुर कोतवाली क्षेत्र के धनछुला जमीन हरखोरी गांव के पास ही पहुंचे थे कि आजमगढ़ की तरफ से जा रही नैनो कार से बुलेट की टक्कर हो गई। हादसे में बुलेट सवार अर्जुन और अभिनय सिंह के साथ ही कार चालक डॉ. जितेंद्र कुमार वर्मा (40) निवासी फतेहपुर कन्हैरा जिला अंबेडकरनगर घायल हो गए। कार चला रहे डॉ. जितेंद्र कुमार राजकीय होम्योपैथी कॉलेज बड़हलगंज गोरखपुर में बतौर एसोसिएट प्रोफेसर तैनात हैं। घटना के समय वह ड्यूटी पर जा रहे थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायलों को तत्काल जिला अस्पताल रवाना किया। रास्ते में ही अर्जुन सिंह की मौत हो गई। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए मर्चरी भेज दिया। मृतक दो पुत्र व एक पुत्री के पिता थे। घटना की सूचना घर पहुंचते ही परिजनों में कोहराम मच गया। वहीं घायल डॉ. जितेंद्र वर्मा व अभिनय का जिला अस्पताल में इलाज चल रहा है।

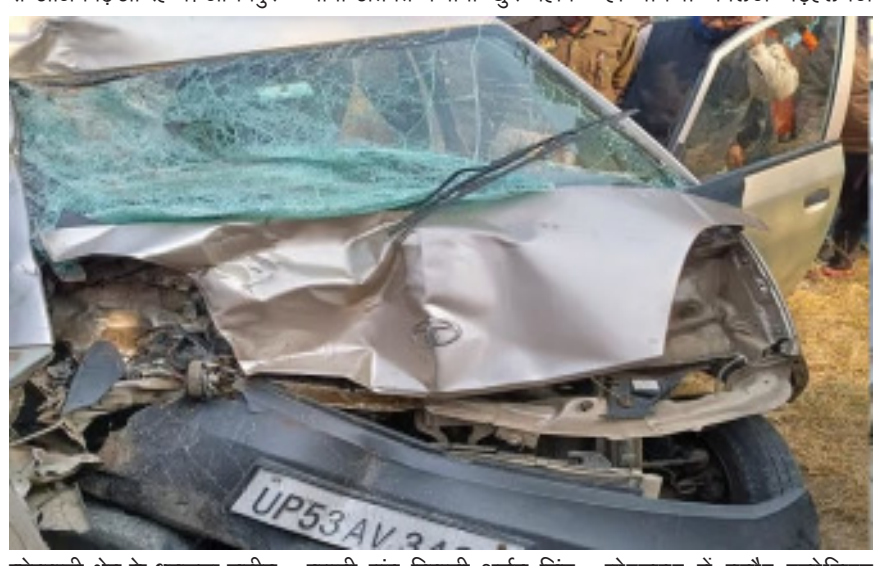

पल्सर पी 150 एवं प्लेटिना डिस्क की हुयी लांचिंग

(आधुनिक समाचार सेवा)

हरहुआ। दुपहिया वाहन कम्पनी बजाज नें ग्रामीण क्षेत्र में भी अपनी दो नयी बाइक की लांचिंग कर ग्राहकों खासकर युवाओं को संतुष्ट करनें का प्रयास किया है। क्षेत्र के देव बजाज बाइक एजेन्सी में बजाज पल्सर पी 150 एवं प्लेटिना 110 डिस्क की लांचिंग पत्रकार दिनेश सिंह व वरिष्ठ अधिवक्ता अवधेश पाण्डेय नें किया। इस अवसर पर अधिष्ठाता द्वय अंकुश सिंह व मृत्युंजय सिंह नें बताया कि पल्सर पी 150 को स्पोर्टी लुक में युवाओं की जरूरतों के हिसाब से कम्पनी नें नए प्लेटफार्म पर बनाया है। स्पोर्ट्स बाइक श्रेणी वाली इस पल्सर को न्यू जनरेशन बाइक कहा जा सकता है। इसमें युवाओं की पसन्द को ध्यान में रखते हुये नए फीचर्स दिये गये हैं। इसमें मोबाइल चार्जर का भी फीचर्स दिया गया है। तो वहीं कम्पनी नें प्लेटिना 110 एबीएस डिस्क को भी युवाओं की पसन्द के अनुरूप अधिक दमदार और डिस्क ब्रेक से लैस कर सुरक्षित बाइक पेश किया है। अभी तक किसी कम्पनी नें 110 सीसी रेंज में एबीएस बाइक नहीं पेश किया है। इस अवसर पर क्षेत्र के तमाम सम्मानित नागरिक व व्यवसायी उपस्थित रहे।

वाराणसी में इन सात जगहों पर करा सकेंगे निशुल्क कोरोना की जांच

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। कोविड प्रोटोकॉल का पालन करने की अपीलसीएमओ डॉ. संदीप चौधरी ने कहा कि किसी भी तरह का संदिग्ध लक्षण दिखने पर लोग बिना किसी हिचकिचाहट के शहर में बने जांच केंद्रों पर कोरोना जांच करा सकते हैं। वाराणसी में अब तक जिला, मंडलीय अस्पताल, शास्त्री अस्पताल रामनगर में कोरोना जांच की सुविधा थी। अब ईएसआईसी अस्पताल, स्वामी विवेकानंद अस्पताल के साथ ही शहरी सीएचसी दुर्गाकुंड में भी लोग कोरोना जांच करवा सकेंगे। देश में अलग-अलग जगहों पर कोरोना के नए वैरियंट से प्रभावित लोग मिल रहे हैं। स्वास्थ्य विभाग की ओर से पहले से चल रहे कोरोना जांच सेंटर के अलावा कई नए केंद्र बनाए जा रहे हैं। जांच के लिए अब स्वास्थ्य केंद्रों को भी शामिल किया जा रहा है। सीएमओ डॉ. संदीप चौधरी ने कहा कि किसी भी तरह का संदिग्ध लक्षण दिखने पर लोग बिना किसी हिचकिचाहट के शहर में बने जांच केंद्रों पर कोरोना जांच करा सकते हैं। ईएसआईसी हॉस्पिटल समेत तीन नए केंद्र बनने से बड़ी राहत होगी।जिस तरह से कोरोना का संक्रमण बढ़ता जा रहा है, उसको देखते हुए रेलवे स्टेशन, रोडवेज बस स्टेशन पर कोरोना प्रोटोकॉल का पालन करने की अपील प्रसारित करवाई जा रही है। कोरोना की पहली, दूसरी, तीसरी लहर की तरह ही इस बार भी कैंट रेलवे स्टेशन, बनारस रेलवे स्टेशन के साथ ही बस स्टेशन पर भी जल्द ही जांच की सुविधा शुरू की जा सकती है। इसको लेकर स्वास्थ्य विभाग की ओर से तैयारी चल रही है। नगर निगम करा रहा सैनिटाइजेशन कोविड को ध्यान में रखकर नगर निगम ने सैनिटाइजेशन की वृहद कार्ययोजना बनाई है। इसके लिए रूटवार रूपरेखा तय की जा रही है, जिन स्थानों पर भीड़भाड़ अधिक है। वहां पर प्रतिदिन सैनिटाइजेशन कराया जा रहा है। नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. एनपी सिंह ने कहा कि सैनिटाइजेशन के कार्य में पूरी मशीनरी को लगाया गया है।

बनारस के इस कब्रिस्तान में उमराव जान को किया गया था सुपुर्द-ए-खाक

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। बरसी पर लोगों ने पढ़ा फातिहाइक तुम ही नहीं तन्हा, उलफत में मेरी रुसवा, इस शहर में तुम जैसे दीवाने हजारों हैं...। उमराव जान फिल्म का यह गीत उस किरदार की याद जेहन में ताजा कर देता है। भले ही वह कब्र में दफन हो गईं, लेकिन उनके चाहने वाले आज भी उनकी मजार पर गुलपोशी करने आते हैं। बेजोड़ थिरकन से देश-दुनिया को मुरीद बनाने वाली मशहूर नृत्यांगना उमराव जान को सोमवार दोपहर काशी में याद किया गया। मौका था उनकी 85वीं बरसी का। सिगरा स्थित दरगाह-ए-फातमान में उनके मकबरे पर लोगों ने फातिहा पढ़ा और पुष्पवर्षा कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उमराव जान ने अपना अंतिम समय बनारस में ही गुजारा था। 26 दिसंबर, 1937 में इसी शहर में अंतिम सांस ली थी। इक तुम ही नहीं तन्हा, उलफत में मेरी रुसवा, इस शहर में तुम जैसे दीवाने हजारों हैं...। उमराव जान फिल्म का यह गीत उस किरदार की याद जेहन में ताजा कर देता है। भले

ही वह कब्र में दफन हो गईं, लेकिन उनके चाहने वाले आज भी उनकी मजार पर गुलपोशी करने आते हैं। अकेलेपन से दुखी होकर आईं थीं बनारस सिनेमाई परदे की चमकदार शख्सियत उमराव जान के असल किरदार की 85वीं बरसी सोमवार को मनाई गई। सामाजिक संस्था डर्बीशायर क्लब की ओर से दोपहर में फातमान स्थित उमराव जान की कब्र पर फातिहा पढ़ी और गुलपोशी की गई। क्लब के अध्यक्ष शकील अहमद जादूगर ने बताया कि अपनी अदाकारी से उमराव जान ने उस दौर के नवाबों, रजवाड़ों से लेकर आम जनमानस तक पर गहरी छाप छोड़ी थी। उमराव जान पर बनी दो फिल्मों पर भी उन्होंने रोशनी डाली। कहा कि फैजाबाद में ही उमराव ने गीत संगीत और नृत्य की शिक्षा ली। उमराव के किरदार को मशहूर निर्देशक मुजफ्फर अली ने बड़े पर्दे पर देश दुनिया के सामने पेश किया तो उमराव का किरदार भारतीय सिनेमा में अमर हो गया।अंतिम समय में अकेलेपन से दुखी होकर उमराव वाराणसी आ गई थीं और अपनी शोहरत की बुलंदियों और दुनिया को छोड़कर 26 दिसंबर 1937 को हमेशा के लिए चली गईं। बरसी के अवसर पर वक्ताओं ने सरकार से उमराव जान की के मकबरे को संरक्षित और सुंदरीकरण करने की मांग की।

जानो ग्राहक जानोः बीमा कंपनी ने क्लेम देने से किया इंकार तो आयोग बना मददगार

(आधुनिक समाचार सेवा)

वाराणसी। मोटरसाइकिल चोरी हो जाने के बाद बीमा कंपनी क्लेम के रुपये नहीं दे रही थी तो पीड़ित ने जिला उपभोक्ता प्रतितोष आयोग में वाद दाखिल किया। लगभग 18 माह तक चली सुनवाई के पश्चात आयोग ने विपक्षी बीमा कंपनी को क्लेम की धनराशि का नियमानुसार भुगतान किए जाने का आदेश दिया। दैनिक जागरण के अभियान में पढ़ें आयोग के फैसले का विवरण यह था मामला पीड़ित रामजनम यादव ने सुपर स्प्लेंडर मोटर साइकिल खरीदी। आइसीआइसीआइ जनरल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड तुलसी कंप्लेक्स शास्त्री नगर (सिगरा) से वाहन का बीमा कराया। दो वर्ष बाद वाहन चोरी हो गया। बीमा कंपनी ने उपभोक्ता के क्लेम को यह कहते हुए खारिज कर दिया की वाहन चोरी होने के बाबत प्रथम सूचना रिपोर्ट विलंब से दर्ज कराई गई। क्लेम पालिसी टर्म्स एंड कंडीशन का वायलेशन करते हुए सात दिन बाद क्लेम प्रस्तुत किया गया है। इस पर पीड़ित ने 24 जून 2021 को जिला उपभोक्ता प्रतितोष आयोग में वाद दाखिल किया।साक्ष्यों, पत्रावली पर उपलब्ध समस्त तथ्यों, साक्ष्यों व विधि व्यवस्थाओं के दृष्टिगत परिवाद एकपक्षीय रूप से अंशतः स्वीकार किया गया। 18 महीने की सुनवाई के पश्चात आयोग के अध्यक्ष सुरेंद्र कुमार सिंह ने 14 दिसंबर 2022 को आदेश दिया कि आदेश की तिथि से 30 दिन के अंदर परिवादी को क्लेम की राशि का बीमा कंपनी नियमानुसार भुगतान करे। ऐसा न करने पर वाद प्रस्तुत करने की तिथि से अंतिम रूप से भुगतान होने तक छह फीसद वार्षिक दर से क्लेम राशि पर ब्याज देय होगा। उक्त के अतिरिक्त तीन हजार रुपये वाद व्यय भी परिवादी विपक्षी बीमा कंपनी से पाने का अधिकारी होगा।

सड़क निर्माण में हेराफेरी का आरोपलगा

(आधुनिक समाचार सेवा)
अनपरा,सोनभद्र। सोनभद्र जिले के नवनिर्मित अनपरा नगर पंचायत में विकास कार्यों को करने के लिए शासन द्वारा आए हुए धन का दुरुपयोग मनमाने तरीके से किया जा रहा है। इसकी चिंता न तो

नगर पंचायत के प्रभारी अधिशासी अधिकारी को है और ना ही यहां के जनप्रतिनिधि को ! आपको बताते चलें कि अनपरा नगर पंचायत में जद से नगर के विभिन्न वार्ड स्थानों में हो रहे सीसी सड़क,डामर सड़क या फिर इंटर लाकिंग सड़क निर्माण कार्यों में ठेकदारों द्वारा लोकल मटेरियल व तय मानक के विपरित गुणवत्ताविहीन कार्य करा सड़कों को भ्रस्टाचार्य की भेट चढ़ाने का काम कराया जा रहा है ! विकास कार्यों में किस तरह अंदरगर्दी होती है इसकी बानगी अनपरा नगर पंचायत में यहां भी देखने को मिली ! आक्रोशित लोगों के अनुसार तकरीबन बारह वर्ष पूर्व एनसीएल सीएसआर के जद से अनपरा मोड़ से पश्चिमी परासी गांव होकर रेनुसागर रोड को जोड़ने वाली तक़रीबन ग्यारह सौ मीटर डामर युक्त बने सड़क वर्षो से क्षतिग्रस्त और नालिया भी ध्वस्त पड़े होने के कारण रहवासियों और राहगीरो को उक्त सड़क और नालियों के जलजमाव का सामना करना पड़ रहा था इन समस्याओं से निजात पाने को लेकर लोगों के अथक प्रयास के बाद अनपरा नगर पंचायत के जद से उक्त सड़क लगभग पच्चीस लाख रुपये की लागत से डामर युक्त बन रही निर्माणधीन सड़क 24 घंटे भी नहीं चल सकी दूसरे दिन ही सुबह हाथों और पैरों की ठोकरों से गिट्टियां उखड़ने लगीं जिसे देखकर स्थानीय सैकड़ो लोगों ने नई सड़क पर उतर गुणवत्ताविहीन कार्य देख हैरान रह गए ! जिसे देखकर आक्रोशित लोगों द्वारा सड़क निर्माण में भ्रष्टाचार का आरोप लगाते हुए गुणवत्ताविहीन कार्य का विरोध कर तयमानक अनुसार गुणवत्ता युक्त कार्य कराने की मांग की ! आरोप लगाया है कि ठेकेदार और नगर पंचायत के ज़िम्मेदार अधिकारियों समेत इंजीनियर की मिलीभगत से सड़क निर्माण कार्य में लीपापोती कर पैसों का बंदरबांट किया जा रहा है। आरोप है कि नगर पंचायत के जद से नगर अंतर्गत बनने वाले सड़कों पर ठेकेदारो द्वारा लोकल घटिया किस्म के मटेरियल लगा गुणवत्ताविहीन कार्य करा भ्रस्टाचार्य को बढ़ावा दिया जा रहा है यह आने वाले दिनों में नवागत चेयरमैन और नगरवासियों के लिए एक सिरदर्द बन जाएगा। जिसको देखकर आम जनता खुद ही परेशान है लेकिन ना ही इस मामले में नगर पंचायत के ज़िम्मेदार अधिकारी या सत्ता शासन के लोगों की नजर पड़ रही है और ना ही इस नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारी इसको देखने की जहमत उठा रहे हैं,अब देखना है कि यह जो नगर पंचायत में सड़कों का निर्माण ठेकेदार द्वारा घटिया किस्म के लोकल मटेरियल से कार्य कराया जा रहा है उस पर जिलाधिकारी महोदय की नजर पड़ती है या नहीं या फिर ज़िम्मेदार लोग मौन होकर ठेकेदार के समर्थन में लगे रहते हैं। इस संबंध में जब अधिशासी अधिकारी से फोन पर वार्ता की गई तो उन्होंने बताया कि जेई द्वारा गुणवत्ताविहीन सड़कों की जांच कराई जा रही है ! नवनिर्मित नगर पंचायत मे इस तरह के खुलेआम हो रहे भ्रस्टाचार्य पर लगाम कसने को लेकर नगर वासियों की आस सोनभद्र जिले के तेजतर्रार इमानदार जिला अधिकारी के ऊपर लगी हुई है और देखना चाह रहे हैं कि मामले में किस प्रकार जांच कराकर कार्रवाई की जाती है ।

वर्षों से बिजली उपभोग कर रहे ग्रामवासी बिजली आपूर्ति बहाल करने की मांग की

(आधुनिक समाचार सेवा)
शक्तिनगर। शक्तिनगर थाना अंतर्गत बलिया नाला स्थित 40 वर्षों से अपने अपने आवास बना उनके बच्चों को पढ़ने लिखने मे असुविधा हो रही है जिसको लेकर रविवार को शक्तिनगर थाना के एसआई अश्वनी राय

कर रहे हैं पूर्व में सभी यहां एनटीपीसी आवासीय परिसर के विद्युत उपयोग कर रहे हैं। पूर्व के महाप्रबंधको द्वारा मौखिक आश्वासन पर विद्युत आपूर्ति नहीं रोकी गई वर्तमान में प्रतिदिन लाइनमैन के द्वारा बलिया नाला की विद्युत आपूर्ति काट दी जा रही है जिससे ग्रामवासी सहित के द्वारा एनटीपीसी प्रबंधक मानव संसाधन को ज्ञापन सौंपा गया किसने बोला गया कि पूर्व की भांति विद्युत आपूर्ति बहाल किया जाए। मौके पर बलिया नाला ग्रामवासी आदित्य, अखिलेश, राहूल, विमल, ओम प्रकाश यादव सहित ग्राम प्रधान चिल्काडाड हीरालाल मौजूद रहे।

श्रद्धा भाव के साथ बड़े धूमधाम से मनाया तुलसी दिवस पर पूजन कार्यक्रम

(आधुनिक समाचार सेवा)
ओबरा/ डाला । विश्व हिंदू महासंघ इकाई सोनभद्र ने श्रद्धा भाव के साथ बड़े धूमधाम से मनाया तुलसी

दिवस पर पूजन कार्यक्रम । विश्व हिंदू महासंघ इकाई सोनभद्र के जिलाध्यक्ष राम कुमार हिंदू अपने कार्यकर्ताओं के साथ रविवार को ओबरा गजराज नगर बिल्ली रेलवे क्रॉसिंग के पास स्थित संकट मोचन हनुमान मंदिर के प्रांगण में श्रद्धा भाव के साथ बड़े धूमधाम से तुलसी दिवस पर माता तुलसी की पूजा अर्चना का कार्यक्रम आयोजित किया गया और उनके द्वारा बताया गया कि यह माता तुलसी जी का पूजन 25 दिसंबर को पूरे भारत में मनाया जाता है यह महापर्व और हमारी भारतीय संस्कृति की परंपरा है जो तुलसी जी का आज जन्म उत्सव मनाया जाता है । यह देशवासियों के सुख समृद्धि के लिए विश्व हिंदू महासंघ आज के दिन मना रहा है और यह संदेश दे रहा है कि भारतीय संस्कृति को हिंदू सनातनी को कि हर घर में आज के दिन तुलसी पूजन होना चाहिए क्योंकि हमारी संस्कृति सनातन है और सनातनी लोगों को माता तुलसी का जो अमृत्व अपार संस्कार हमारे सनातन धर्म में मिलता है जो पूजन उत्सव में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । इसलिए सभी प्रदेश वासी देशवासी आज के दिन धूमधाम के साथ तुलसी पूजन उत्सव को मना रहे हैं । पूजन कार्यक्रम में मुख्य रूप से मंदिर के महंत इंद्रजीत देव पांडे ओबरा नगर अध्यक्ष सर्वेश दुबे , नगर महामंत्री विनय दुबे, नगर प्रभारी विनोद तिवारी,कोन ब्लॉक अध्यक्ष अरविंद कुमार , नगर अध्यक्ष डाला सुधीर पांडे कमांडो , ओबरा धर्माचार्य प्रभारी दिनेश तिवारी आदि कार्यकर्ता सहित स्थानीय महिलाएं उपस्थित रही ।

चोपन थाना में आज शनिवार को आयोजित थाना समाधान दिवस पर उपजिलाधिकारी ओबरा के नेतृत्व हुआ सम्पन्न

(आधुनिक समाचार सेवा)
डाला,सोनभद्र। इस दौरान 02 प्रार्थना पत्र राजस्व विभाग से सम्बन्धित पड़े तथा 06 प्रार्थना पत्र पुलिस विभाग से सम्बन्धित रहे, जिसमें से 01 प्रार्थना पत्र राजस्व विभाग समेत 06 प्रार्थना पत्र पुलिस विभाग से सम्बन्धित को तत्काल मौके पर पुलिस/राजस्व विभाग की टीम को भेजकर निस्तारण करवाया गया शेष 01 प्रार्थना पत्र राजस्व विभाग को निस्तारण हेतु भेजा गया। जिसमें कुल आठ प्रार्थना पत्र थाना दिवस पर आवेदन कर्ताओं के द्वारा दिए गए और राजस्व विभाग एवं पुलिस विभाग ने तत्काल सात आवेदन पत्र का निस्तारण किया।

अमृत सरोवर का पानी कम होते ही हकीकत आयी सामनें

(आधुनिक समाचार सेवा)
डाला,सोनभद्र। विकास खण्ड चोपन अंतर्गत ग्राम पंचायत पनारी के टोला जुड़वानी में बना अमृत सरोवर में

सरोवर का पानी कम होते ही हकीकत गुडवक्ता का बयां करने लगीं । देखा जाय तो विकास खण्ड चोपन अंतर्गत ग्राम पंचायत पनारी भ्रस्टाचार का जीता जागता प्रमाण बनता जा रहा हैं। ग्राम पंचायत पनारी में जो कार्य हो रहा है। वह ज्यादा से ज्यादा कार्य गुणवक्ता विहीन है। आदिवासी बाहुल्य क्षेत्र के नाम पर सरकार द्वारा दिये जा रहे विकास के धनराशि का दोहन कोई पनारी ग्राम पंचायत के जिम्मेदारों से करना सीखें । कागज पर कुछ और तथा हकीकत कुछ और बयां कर रही हैं । सत्र 2022-23 अंतर्गत 22 जून 2022 को सरोवर का निर्माण कार्य लगभग 20.52 लाख की लागत से प्रारंभ हुआ । जो निर्माण में ही भ्रस्टाचार की घंटी बजने लगा । लाखो की लागत से निर्माण हो रहे सरोवर पर एक भी पौधे नही लगाए गए हैं । जो पत्थर लगाए गए है वह सभी स्थानीय जंगल के हैं । सरोवर का पानी कम होते ही सरोवर का हकीकत बाहर तांडव करने लगा। देखा जाय तो ग्राम पंचायत में हो रहे लगभग सभी पक्के सम्बन्धित कार्य 2 नम्बर के पत्थर से ही निर्माण कर बंदर बाट किया जा रहा है। जिसमे ग्राम प्रधान व ग्राम पंचायत विकास अधिकारी की भूमिका संदिग्ध प्रतीत हो रही हैं । साथ ग्राम पंचायत के कांट्रेक्टर का तो सोने पे सुहागा है। क्यों कि डाला ग्रिट के पत्थर के जगह स्थानीय पहाड़ो के पत्थर डाल गाढ़ी कमाई का जरिया बनता जा रहा है। स्थानीयों ने बताया कि यहां जो पत्थर लगे है वह नजदीकी पहाड़ियों से निकाल कर लाये गए हैं । जिसका प्रमाण मौजूद हैं इस सम्बंध में अवर अभी0 शिवराज जी से टेलीफोन के माध्यम से सम्पर्क करना चाहा गया तो श्री मान जी का मोबाइल बन्द मिला , तथा ग्राम पंचायत विकास अधिकारी द्वारा फोन रिसीव नही किया गया।

डीएवी पब्लिक स्कूल खड़िया में दो दिवसीय कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम का हुआ शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)
शक्तिनगर/सोनभद्र। एनसीएल द्वारा संचालित डीएवी पब्लिक स्कूल खड़िया में दो दिवसीय कैपेसिटी बिल्डिंग ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किया गयात् यह प्रोग्राम प्री प्राइमरी कक्षाओं में अध्यापन करने वाली शिक्षिकाओं के शैक्षणिक कौशल को बेहतर बनाने के उद्देश्य से आयोजित किया जा रहा है कार्यक्रम में डीएवी यूपी जोन डी केविद्यालयों के प्री प्राइमरी कक्षाओं की शिक्षिकाएं हिस्सा ले रही हैं कार्यक्रम का शुभारंभ डीएवी स्कूल खड़िया की प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडे तथा डीएवी पब्लिक स्कूल ककरी की प्राचार्या श्रीमती पुष्पांजलि के द्वारा के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया इस दौरान इस दौरान डीएवी पब्लिक स्कूल खड़िया की प्राचार्या श्रीमती संध्या एल पांडे ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए बताया एक शिक्षक के रूप में हमारा रोल एक एजुकेटर या एक पारंपरिक शिक्षक का नहीं बल्कि एक फैसिलिटेटर का होना चाहिए उन्होंने कहा उन्होंने कहा की पूर्व प्राथमिक शिक्षिका ओं को बच्चों के साथ मातृ तुल्य व्यवहार करना चाहिए साथ ही कक्षा में प्रवेश से पूर्व प्रत्येक दिन के निर्धारित उद्देश्य तथा उनके उचित क्रियान्वयन की सोच रखकर ही कक्षा में प्रवेश करना चाहिए त् इस दौरान डीएवी पब्लिक स्कूल ककरी की प्राचार्या श्रीमती पुष्पांजलि ने प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए कहा की एक बच्चे के जीवन में पूर्व प्राथमिक शिक्षक की भूमिका एक संरक्षक की होती है एक प्राथमिक शिक्षक का कर्तव्य अपने मातृ तुल्य व्यवहार से बच्चों का सर्वांगीण विकास में सहायक होना है डीएवी यूपी जोन डी के सहायक रीजनल ऑफिसर श्री ए के सिंह ने ऑनलाइन माध्यम से जुड़ कर प्रतिभागियों को शुभकामनाएं दी इस दो दिवसीय कार्यशाला के प्रथम दिन विभिन्न बिंदुओं पर विभिन्न स्कूलों के मास्टर ट्रेनर्स द्वारा प्रकाश डाला गया प्रतिभागियों ने भी विभिन्न गतिविधियों में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया अंत में शांति पाठ के साथ कार्यशाला के प्रथम दिन का समापन किया गया।

एक तरफ महंगाई की मार से आम आदमी उबर नहीं पा रहे

(आधुनिक समाचार सेवा)
डाला,सोनभद्र। एक तरफ महंगाई की मार से आम आदमी उबर नहीं पा रहे हैं। वहीं, दूसरी ओर बिजली के बिल ने उपभोक्ताओं की कमर तोड़ कर रख दी है। ज्वारीडाड़ सब स्टेशन के अंतर्गत आने वाले ग्रामीणों बिजली विभाग द्वारा भेजें गए मनमाना तरीके के बिल देखते ही उपभोक्ता हक्का बक्का हो जा रहा हैं। पहले मीटर रीडिंग के हिसाब से बिल दिया जाता रहा लेकिन की महीनों से बगैर मीटर रीडिंग के बिजली का बिल मनमाना तरिके

ने शिकायत करते हुए बताया है कि पहले कूल खपत यूनिट के हिसाब से बिल दिया जाता था, लेकिन वर्तमान बिजली के बिल में खपत से तीन और चार गुना बढ़ाकर या मनमाना तरीके बिजली बिल भेज दिया जा रहा है। ज्वारीडाड़ सब स्टेशन के अंतर्गत क्षेत्र में वर्तमान में बिजली उपभोक्ता इस कदर परेशान हैं कि जैसे मानो भेज दिया जा जिसके कारण उपभोक्ता परेशान हैं। वही विभाग के अधिकारी से इस सम्बंध में पूछा जाता हैं तो वह भी अनभिज्ञता जताते हैं। बिजली विभाग की इस लापरवाही से कही न कही सवालिया निशान खड़ा करता हैं कि आखिर इस तरीके का मनमाना बिजली का भेज कर उपभोक्ताओं परेशान क्यों किया जा रहा हैं।

एनटीपीसी सिंगरौली ने हासिल किया पीआरएसआई पुरस्कार

(आधुनिक समाचार सेवा)
सोनभद्र। एनटीपीसी सिंगरौली ने पब्लिक रिलेशन सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई) द्वारा भोपाल में आयोजित 44वें अखिल भारतीय जनसंपर्क सम्मेलन में सोसाइटी ऑफ इंडिया (पीआरएसआई) नेशनल अवार्ड कॉर्पोरेट कम्युनिकेशन और पब्लिक रिलेशन के क्षेत्र में प्रतिष्ठित पुरस्कारों में से एक है। पीआरएसआई नेशनल पुरस्कार सराहना करते हुए पीआरएसआई राष्ट्रीय प्रतिष्ठित पुरस्कार पुरस्कार हासिल करने पर बधाई दी। उन्होंने कहा कि किसी भी संगठन, विशेष रूप से एनटीपीसी लिमिटेड जैसे पीएसयू में

ठजनसंपर्क इन एक्शन अवार्ड श्रेणीठ में पीआरएसआई राष्ट्रीय पुरस्कार में तीसरा स्थान हासिल किया। यह पुरस्कार एनटीपीसी सिंगरौली के जन संपर्क विभाग के समर्पित प्रयासों हेतु प्रदान किया गया है। पब्लिक रिलेशन प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है, जिसमे जनसंपर्क विभाग को नये कीर्तिमान स्थापित करने हेतु सम्मानित किया जाता है।इस अवसर पर श्री बसुराज गोस्वामी, कार्यकारी निदेशक, एनटीपीसी सिंगरौली ने जनसंपर्क विभाग की जनसंपर्क विभाग की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है एवं उन्होंने कामना व्यक्त है कि एनटीपीसी सिंगरौली का जनसंपर्क विभाग इसी तरह से भविष्य में भी सफलता के नये मानक स्थापित करे।

निपुण भारत अभियान के तहत नुक्कट नाटक आयोजित

(आधुनिक समाचार सेवा)
चोपन। विकास खण्ड चोपन के थाना चोपन अंतर्गत निपुण भारत अभियान के तहत नुक्कड़ नाटक

कांशीराम आवास स्थित हनुमान मंदिर परिसर में आयोजित किया गया जिसमे राज्य सन्दर्भ समूह के सदस्य विद्यासागर, समाज सेविका सावित्री देवी प्रधानाध्यापिका पूनम तिवारी,अजहरी बेगम, राकेश पांडे , प्रधानाध्यापिका रीना शर्मा सहित सैकड़ों ग्रामीण उपस्थित रहे। वही करगरा ग्राम में संकुल शिक्षक गुरुप्रसाद, प्रधानाध्यापक दिनेश कुमार ,शैलेश ,श्याम बिहारी, शिक्षक संकुल सुनील कुमार वर्मा सहित सैकड़ों की संख्या में बच्चे और वरिष्ठ नागरिक नुक्कड़ नाटक कार्यक्रम में उपस्थित होकर संकल्प लिया कि प्रतिदिन बच्चो को विद्यालय भेजेंगे और विद्यालय क्रियाकलापों में सक्रिय सहभागिता निभाएंगे। सरकार के माध्यम से बच्चों को दी जाने वाली सुविधाएं, पढ़ाई के महत्व,दिव्यांग शिक्षा,प्रदान किए जाने वाले उपकरण, बालिका शिक्षा, निपुण भारत लक्ष्य इत्यादि के बारे में लोगों को जागरूक किया गया और जानकारी प्रदान की गई।

चोपन पुलिस ने मछली चोरी कर भाग रहे दो अभियुक्त को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
डाला,सोनभद्र। पुलिस अधीक्षक के निर्देशन एवं अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय व क्षेत्राधिकारी नगर के पर्यवेक्षण में, तथा प्रभारी निरीक्षक चोपन के कुशल नेतृत्व में अपराध एवं अपराधियों पर प्रभावी अंकुश लगाये जाने हेतु चलाये जा रहे अभियान के तहत चोपन पुलिस ने रविवार को रिहन्द डैम से मछली चोरी कर भाग रहे थे जिस सूचना के आधार पर राजेश शर्मा उम्र लगभग 38 वर्ष पुत्र अंगद शर्मा निवासी रेनूकूट थाना पिपरी व नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता उम्र लगभग 32 वर्ष पुत्र स्वरामविचार शाह निवासी हाईटेक रेनूकूट थाना पिपरी को शाम करीब चार बजकर दस मिनट पर डाला झुलन टाली के पास से गिरफ्तार कर लिया है और. मु0अ0सं0- 308/2022 धारा 379, 411 में मुकदमा दर्ज कर मा. न्यालय भेजा जा रहा है इस दौरान टीम में लक्ष्मण पर्वत राकेश कुमार ओझा (ज्येष्ठ मत्स्य निरीक्षक) हे0 का0 अमरेश कश्यप का. हरिश्चन्द्र शामिल रहे।

बाल विकास परियोजना के नाम पर ठगी: शातिरों ने पहले अकाउंट डिटेल्स और ओटीपी मांगा

(आधुनिक समाचार सेवा)
मिर्जापुर। विंध्याचल थाना क्षेत्र के पियरीभीट गांव निवासी गणेश बिंद ने बताया कि रविवार की शाम

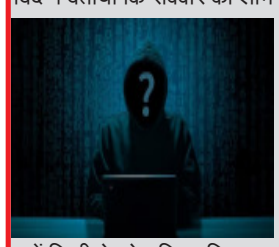

उन्हें किसी ने फोन किया कि प्रसव के लिए आंगनबाड़ी केंद्र से रुपये खाते में भेजना है। रुपये देने के नाम पर ठग ने उनके बैंक खाते का नंबर व ओटीपी ले लिया। इसके बाद मिर्जापुर में बाल विकास परियोजना से लाभ के चक्कर में एक व्यक्ति के बैंक खाते से साइबर ठगों ने 92 हजार रुपये निकाल लिया। पीड़ित अपने रुपये वापस कराने के लिए भटक रहा है। विंध्याचल थाना क्षेत्र के पियरीभीट गांव निवासी गणेश बिंद ने बताया कि रविवार की शाम उन्हें किसी ने फोन किया कि प्रसव के लिए आंगनबाड़ी केंद्र से रुपये खाते में भेजना है। रुपये देने के नाम पर ठग ने उनके बैंक खाते का नंबर व ओटीपी ले लिया। इसके बाद से ठगों ने दो घंटे के अंदर छह बार में 92 हजार 317 रुपये उनके बैंक खाते से निकाल लिया।

बोलेरो की चपेट में आने से एक वृद्ध हुआ गंभीर रूप से घायल

(आधुनिक समाचार सेवा)
डाला,सोनभद्र। डाला सोनभद्र स्थानीय डाला पुलिस चौकी क्षेत्र के लंगड़ा मोड़ डिवाइडर कटिंग के पास सड़क पार करते समय बोलेरो की चपेट में आने से एक वृद्ध हुआ गंभीर रूप से घायल प्राप्त जानकारी के मुताबिक सोमवार शाम लगभग 5:00 बजे के करीब डाला पुलिस चौकी क्षेत्र के लंगड़ा मोड डिवाइडर कटिंग के पास घायल रामपति भारती उम्र लगभग 70 वर्ष निवासी बाड़ी गांव सड़क पार कर रहें थे उसी समय अचानक से अज्ञात बोलोरो आकर धक्का मार दिया और मौके से बोलोरो फरार हो गया वहीं नव निर्माण सेना के युवाओं ने तत्काल घायल को निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया समाचार लिखे जाने तक चिकित्सक ने घायल की स्थिति ठीक बताया जा रहा है इस घटना के संबंध में युवाओं ने डाला पुलिस को सूचना दे दी है।

पुजारा ने बताया क्यों विराट कोहली से पहले अक्षर को मिला बल्लेबाजी करने का मौका

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। के खिलाफ खेली गई दो मैचों की टेस्ट सीरीज में भारत ने 2-0 से क्लीन स्वीप करते हुए सीरीज पर कब्जा किया। इस सीरीज में टीम इंडिया की तरफ से 'मैन ऑफ द सीरीज' रहे चेतेश्वर पुजारा ने बताया है आखिर क्यों विराट के रहते हुए अक्षर पटेल को बल्लेबाजी करने के लिए भेजा गया। पुजारा ने सोनी स्पोर्ट्स पर बातचीत करते हुए कहा ठहम दिन के अंत योगदान दिया और उन्होंने 69 गेंद पर 34 रन कीपारी खेली। लेकिन बावजूद इसके टीम इंडिया के प्रमुख बल्लेबाजों की असफलता ने इस मैच में टीम इंडिया की मुश्किलें बढ़ा दी थी। 145 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए टीम

चेतेश्वर पुजारा ने कमाल का प्रदर्शन किया और उन्हें 'मैन ऑफ द सीरीज' से नवाजा गया। लेकिन बांग्लादेश के खिलाफ इस टेस्ट मैच में टीम इंडिया के प्रदर्शन और फैसलों पर सवाल खड़े किए जा रहे हैं। चाहे कुलदीप यादव को बाहर करने का फैसला हो या फिर दूसरी पारी में विराट कोहली से पहले अक्षर पटेल को भेजने का निर्णय। लेकिन में ज्यादा विकेट गंवाना नहीं चाहते थे। बांग्लादेश की ओर से 2 बाएं हाथ के स्पिन गेंदबाज लगातार अटैकिंग मूड में थे और गेंद बहुत ज्यादा घूम रही थी। ऐसे में बाएं हाथ के बल्लेबाज अक्षर पटेल को भेजा गया था और ये फैसला टीम प्रबंधन की ओर से लिया गया जो की एक बहुत ही अच्छा कदम साबित हुआङ्गबता दें अक्षर पटेल ने भारत की दूसरी पारी में बल्ले से अहम इंडिया एक वक्त 74 रन पर 7 विकेट गंवा कर संघर्ष कर रही थी। लग रहा था कि बांग्लादेश ऐतिहासिक जीत रचने के कगार पर है, लेकिन अश्विन और अय्यर ने 8वें विकेट के लिए 71 रन की नाबाद साझेदारी कर न केवल टीम को जीत दिलाई बल्कि वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में पहुंचने की उनकी उम्मीदों को भी जिंदा रखा।

बल्ले से नहीं गेंद से भी कमाल करते हैं लबुशाने, फील्डिंग देख लोग कर रहे हैं तारीफ

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के खिलाफ दूसरा टेस्ट मैच ऐतिहासिक मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर खेला जा रहा गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के बीच फील्डरों ने भी कमाल का काम किया जिसकी सोशल मीडिया पर खूब तारीफ हो रही है। दरअसल 56 के स्कोर पर 2 विकेट गंवा चुकी रन आउट का यह वीडियो सोशल मीडिया पर खूब तारीफ बटोर रहा है।उसकी अगली ही गेंद पर स्टार्क ने तेंबा बवुमा को पवेलियन भेज दिया। लंच से पहले यह साउथ

है। 3 मैच की सीरीज में 0-1 से पीछे चल रही साउथ अफ्रीका की टीम दूसरे टेस्ट में भी अच्छी स्थिति में नहीं है। ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने इस मैच में टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। उनका यह फैसला उनके गेंदबाजों ने खासतौर से मिचेल स्टार्क ने सही साबित करते हुए शुरुआत में ही 2 विकेट झटककर साउथ अफ्रीका की टीम को बैकफुट पर धकेल दिया। साउथ अफ्रीका की टीम एक अच्छी साझेदारी के इंतजार में थी लेकिन उनके इस मंसूबे पर पानी फेरा मार्नस लबुशाने ने जिन्होंने डायरेक्ट थ्रो पर साउथ अफ्रीका के कप्तान को रन आउट किया। डीन एल्गर जब 26 रन के स्कोर पर थे तो उन्होंने मिचेल स्टार्क की गेंद पर मिड ऑफ पर एक शॉट खेला और सिंगल्स के लिए दौड़ पड़े, लेकिन मार्नस लबुशाने ने डायरेक्ट थ्रो पर उन्हें रन आउट कर दिया। उनका अफ्रीका के लिए चौथा झटका था।3 मैच की सीरीज में फिलहाल ऑस्ट्रेलिया की टीम 1-0 से आगे हैं और दूसरे मैच की शुरुआत जिस तरह से ऑस्ट्रेलिया ने की है उसको देखते हुए कहा जा सकता है कि दूसरे टेस्ट में भी साउथ अफ्रीका की टीम के लिए मुश्किल होने वाली है। टीम इंडिया के लिहाज से भी साउथ अफ्रीका का इस सीरीज में हारना जरूरी है।

दूसरे टेस्ट के लिए इस प्लेइंग के साथ उतरेंगी ऑस्ट्रेलिया, जोश हेजलवुड हुए टीम से बाहर

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के बीच खेली जा रही तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मैच कल यानि 26 दिसंबर 2022 से खेला जाएगा। बता दें ऑस्ट्रेलिया ने पहला टेस्ट मैच 6 विकेटों से जीतकर सीरीज में 1-0 से अजय बढ़त हासिल कर ली है। वहीं दूसरे टेस्ट मैच से पहले ऑस्ट्रेलिया ने अपनी प्लेइंग का ऐलान कर दिया है। ऑस्ट्रेलिया ने अपने स्क्वॉड में कुछ ज्यादा बदलाव नहीं किया है। ऑस्ट्रेलिया और श्रीलंका के बीच खेली जा रही तीन मैचों की टेस्ट सीरीज का दूसरा मुकाबला 26 दिसंबर को मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड में खेला जाएगा। बता दें पहले टेस्ट मैच में ऑस्ट्रेलिया को 6 विकेटों से शानदार जीत मिली थी। वहीं बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के लिए पैट कमिंस ने एक दिन पहले ही अपनी प्लेइंग िघ् का ऐलान कर दिया है। दूसरे टेस्ट मैच में जोश हेजलवुड चोट के चलते एक बार

फिर टीम से बाहर हो चुके है। उनकी जगह स्कॉट बोलैंड को टीम में शामिल किया गया है। बता दें ऑस्ट्रेलिया टीम के ओपनर डेविड वॉर्नर साउथ अफ्रीका के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में अपनि करियर का 100वां टेस्ट मुकाबला खेलेंगे। बता दें वॉर्नर इस वक्त खराब फॉर्म से जूझ रहे है। साउथ अफ्रीका के खिलाफ पर्थ में खेले गए पहले टेस्ट मैच में डेविड का बल्ला खामोश रहा, वो बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गए और दूसरी पारी में मात्र 3 रन बनाकर आउट हुए। इससे पहले वेस्टइंडीज के खिलाफ 2 टेस्ट मैचों की सीरीज में भी वह रन बनाने में नाकाम रहे है। ऐसे में 100वें टेस्ट मैच में वॉर्नर कैसा प्रदर्शन करते हुए नजर आएंगे ये देखना काफी दिलचस्प होगा।

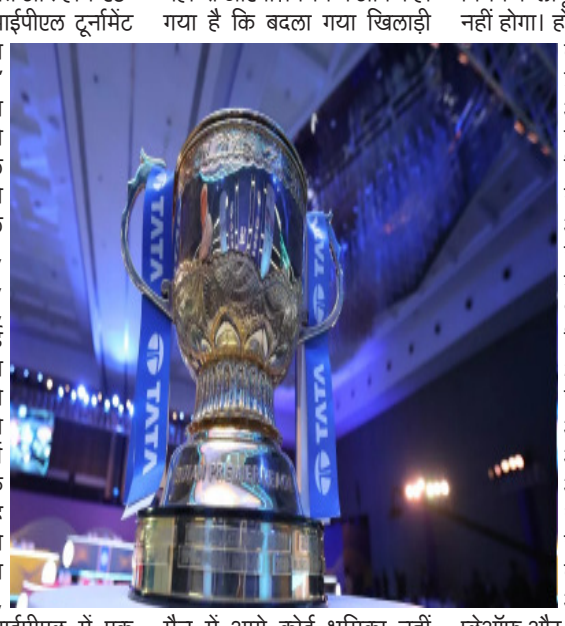

आईपीएल 2023 में लागू होगा इम्पैक्ट प्लेयर का रूल, होम एंड अवे फॉर्मेट में खेला जा सकता है टूर्नामेंट

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। प्रत्येक सीजन की तरह इंडियन प्रीमियर लीग (घ्इथ्) को बेहतर और अधिक रोमांचक बनाने के लिए कुछ नई चीजों को जोड़ा गया है। आईपीएल लीग का 16वां सीजन अलग नहीं होगा। इस सीजन क्रिकेट फैंस 'इम्पैक्ट प्लेयर' नियम की शुरूआत और होम-एंड-अवे फॉर्मेट में आईपीएल टूर्नामेंट खेला जा सकता है। इम्पैक्ट प्लेयर' नियम और होम एंड अवे फॉर्मेट की वापसी आईपीएल की रोचकता को पूरी तरह से बदल देगी। फुटबॉल, रग्बाि, बास्केटबॉल, बेसबॉल जैसे कई टीम इस नियम का इस्तेमाल कर रही हैं। क्रिकेट में भी विभिन्न लीगों में विभिन्न प्रकार के खिलाड़ी की जगह दूसरे खिलाड़ी को लाकर इस नियम को अपना रहे हैं, लेकिन 2023 आईपीएल में एक प्रभावशाली खिलाड़ी को पेश करने वाला यह पहला सीजन होगा। इम्पैक्ट प्लेयर नियम क्या है और यह कैसे काम करेगा इम्पैक्ट प्लेयर नियम के अनुसार, एक टीम को प्लेइंग इलेवन के अलावा टॉस में चार इम्पैक्ट खिलाड़ियों की सूची देना होगा। वे अपने इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में चार में से किसी एक का उपयोग इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में कर सकते हैं। एक कप्तान एक पारी की शुरूआत से पहले इंपैक्ट प्लेयर ला सकता है; एक ओवर के अंत में; और विकेट गिरने पर या बल्लेबाज के रिटायर होने पर इसका इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, अगर गेंदबाजी करने वाली टीम एक ओवर के दौरान एक इम्पैक्ट प्लेयर लाती है तो उन्हें ओवर की शेष गेंदों को फेंकने की अनुमति नहीं दी जाएगी।नियम में आगे कहा गया है कि बदला गया खिलाड़ी

मैच में आगे कोई भूमिका नहीं निभाएगा। जहां तक प्रतिबंध की बात है, अगर कोई टीम अपने शुरूआती इलेवन में चार विदेशी खिलाड़ियों का नाम लेती है, तो वे केवल एक भारतीय खिलाड़ी को ही इस्तेमाल में ला सकते हैं। हालांकि, यदि कोई टीम केवल तीन या उससे कम विदेशी खिलाड़ियों के साथ जाती है, तो वे एक विदेशी खिलाड़ी को इम्पैक्ट प्लेयर के रूप में ला सकते हैं, लेकिन उन्हें टॉस में अपने चार विकल्पों के हिस्से के रूप में विदेशी खिलाड़ी को नामांकित करना होगा। जब गेंदबाजी करने वाली टीम अपने इम्पैक्ट प्लेयर को लेकर आती है, तो उन्हें अपने खिलाड़ी द्वारा फेंके गए ओवरों की संख्या के बावजूद चार ओवरों का अपना पूरा कोटा डालने की अनुमति होगी। इसके अलावा, इंपैक्ट प्लेयर नियम के लागू के बाद कोई बदलाव नहीं होगा। होम एंड अवे प्रारूप की वापसी कोविड-19 के प्रकोप के बाद से आईपीएल कुछ ही स्थानों पर आयोजित किया गया है। 2020 में, लीग संयुक्त अरब अमीरात में तीन स्थानों - दुबई, शारजाह और अबु धाबी में दर्शकों के बिना खेली गई थी। 2021 में भी टूर्नामेंट चार स्थानों - दिल्ली, अहमदाबाद, मुंबई और चेन्नई में आयोजित किया गया था। महाराष्ट्र के चार स्टेडियमों ने क्रमशः कोलकाता और अहमदाबाद में प्लेऑफ और फाइनल को छोड़कर आईपीएल 2022 सीजन के सभी लीग मैचों की मेजबानी की।हालांकि, अभी तक महामारी नियंत्रण में है और बीसीसीआई एक पूर्ण घरेलू सीजन का आयोजन कर रहा है। लीग अपने पुराने प्रारूप में वापस आ जाएगी, जिसमें प्रत्येक टीम घर और बाहर मैच खेलेगी। आईपीएल के पारंपरिक होम एंड अवे आधार पर लौटने के साथ, टीमों को अपनी रणनीति बनानी होगी और उसी के अनुसार अपनी प्लेइंग इलेवन को अंतिम रूप देना होगा।

90 साल बाद हुआ बांग्लादेश के खिलाफ दूसरे टेस्ट मैच में यह कमाल, अश्विन और श्रेयस ने मचाया धमाल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारतीय टीम ने मीरपुर टेस्ट में बांग्लादेश के खिलाफ 3 विकेट से जीत दर्ज की। बांग्लादेश ने शानदार प्रदर्शन करते हुए एक समय भारत को मुश्किल परिस्थिति में ला खड़ा किया था, लेकिन आर अश्विन और श्रेयस और श्रेयस अय्यर ने नाबाद साझेदारी की। दोनों ने आठवें विकेट के लिए नाबाद 71 रनों की साझेदारी की। 90 साल बाद चौथे दिन भारत ने आठवें विकेट के लिए 70 या उससे ज्यादा रन की साझेदारी की। इससे पहले 1932 में अमर सिंह और लाल सिंह 74

अय्यर भारत के खेवनहार बने। 90 साल बाद अश्विन और श्रेयस ने इतिहास दोहराते हुए आठवें विकेट के लिए चौथे दिन के खेल के दौरान नाबाद साझेदारी की। भारतीय ने टीम ने दो टेस्ट मैचों की सीरीज में क्लीन स्वीप किया। इस जीत से भारत विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के प्वाइंट्स टेबल में दूसरे स्थान पर मौजूद है। चौथे दिन के खेल के पहले सत्र में अश्विन रन की साझेदारी की थी गौरतलब हो कि लाल सिंह और अमर सिंह ने इंग्लैंड के खिलाफ मैच में 8वें विकेट के लिए 74 रन जोड़े थे। भारत और इंग्लैंड के बीच ये टेस्ट मैच साल 1932 में लॉर्ड्स के ऐतिहासिक मैदान पर खेला गया था। इस मैच में अश्विन 62 गेंद पर 42 जबकि अय्यर ने 46 गेंद पर 29 रन की नाबाद पारी खेली।

नए साल में श्रीलंका से भिड़ेगी टीम इंडिया, जानें दौरे का पूरा शेड्यूल

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। टीम इंडिया का बांग्लादेश दौरा खत्म हो गया है। मीरपुर में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच में भले ही टीम इंडिया को रविचंद्रन रन की अटूट साझेदारी कर टीम को 3 विकेट से जीत दिला दी।2023 का साल टीम इंडिया के लिए बेहद खास है क्योंकि इस साल टीम को वर्ल्ड कप खेलना है। इसकी चोट के कारण बांग्लादेश के खिलाफ टेस्ट सीरीज से बाहर रहे रोहित शर्मा का टी20वर्ल्ड कप में भी खेलना मुश्किल लग रहा है। इसका मतलब है कि टीम इंडिया, हार्दिक

अश्विन और श्रेयस अय्यर की पारी ने जीत दिला दी हो, लेकिन टीम के प्रदर्शन को लेकर कई सवाल खड़े हुए हैं। दूसरे टेस्ट मैच में टीम इंडिया के सामने 145 रन का लक्ष्य था, लेकिन उसे हासिल करने में बल्लेबाजों ने हाथ खड़े कर दिए वो तो भला हो अश्विन और अय्यर का जिन्होंने 8वें विकेट के लिए 71 शुरुआत श्रीलंका दौरे से हो जाएगी। जनवरी के शुरुआत में ही श्रीलंका की टीम, भारत दौरे पर आ रही है, जहां वह टी20वर्ल्ड कप के अलावा वनडे सीरीज खेलेगी। टी20 सीरीज की शुरुआत 3 जनवरी से शुरू हो जाएगा जबकि वनडे सीरीज की शुरुआत 10 जनवरी हो जाएगी। हार्दिक की कप्तानी में टीम इंडिया पांड्या के नेतृत्व में एशियन चैंपियन श्रीलंका की टीम से भिड़ेगी। पहले 3 मैच की टी20वर्ल्ड कप सीरीज होगी उसके बाद 3 वनडे मैच की सीरीज भी खेली जाएगी। उम्मीद है कि रोहित शर्मा वनडे सीरीज के लिए उपलब्ध रहेंगे। हालांकि अभी इसके लिए टीम का एलान नहीं किया गया है।

श्रेयस अय्यर को खेलता देख ड्रेसिंग रूम में मची खलबली हो गई शांत, कप्तान ने किया खुलासा

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारत ने बांग्लादेश को तीन से हराकर दो टेस्ट मैचों की सीरीज में क्लीन स्वीप किया है। भारत की इस जीत में अश्विन माहौल के बारे में भी जानकारी दी। मैच खत्म होने के बाद राहुल ने कहा कि,जल्दी,जल्दी विकेट गिरने पर ड्रेसिंग रूम में खलबली मच गई थी। लेकिन श्रेयस के मैदान पर के साथ उनकी साझेदारी काफी बढ़िया थी।28वें ओवर में करने आए थे बैटिंग गौरतलब हो कि श्रेयस 28वें ओवर में बल्लेबाजी करने क्रीज पर आए थे। इस समय गेंद एकदम

और श्रेयस अय्यर हीरो रहे। दोनों ने मिलकर आठवें विकेट के लिए 71 रन की साझेदारी की। श्रेयस ने 46 गेंद पर नाबाद 29 रन बनाए। अश्विन ने 62 गेंद पर 42 रन की नाबाद पारी खेली। भारत की जीत के बाद कप्तान केएल राहुल ने दोनों की जमकर तारीफ की। साथ ही 7 विकेट गिरने के बाद ड्रेस रूम के जाते ही शोर शांत हो गया।केएल राहुल ने कहा, जिस तरह से उन्होंने आज बल्लेबाजी की वह अद्भुत थी। उन्होंने बल्लेबाजी को काफी आसान बना दिया। काफी दबाव था, ड्रेसिंग रूम में थोड़ी खलबली थी, लेकिन जब हम श्रेयस को बल्लेबाजी करते देख रहे थे तो ऐसा नहीं लग रहा था कि कोई खलबली है। अश्विन सॉफ्ट हो गई थी और पहले की तुलना में धीमी हो गई थी, लेकिन फिर भी श्रेयस ने संभल कर खेला। श्रेयस की बल्लेबाजी में आत्मविश्वास था। लेंथ को परखना, आगे या पीछे खेलना, बेहिसाब जोखिम उठाए बिना हमेशा रनों की तलाश में रहना। बल्लेबाजी के दौरान वह काफी शांत दिखे।

विराट कोहली ने मेहदी हसन को गिफ्ट की अपनी जर्सी

(आधुनिक समाचार सेवा)
नई दिल्ली। भारतीय टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली (ढ्ढ्र ख्द्फ्त्) की फैन फोलोइंग से हर कई वाकिफ है। फैंस ही नहीं बल्कि कई क्रिकेटर्स भी कोहली को अपना रोल मॉडल मानते है। इसी कड़ी में सोशल

मीडिया पर एक तस्वीर तेजी से वायरल हो रही है, जिसमें बांग्लादेश के खिलाफ दो मैचों की टेस्ट सीरीज जीतने के बाद विराट कोहली ऑलराउंडर मेहदी हसन मिराज को एक खास गिफ्ट देते हुए दिखें। बता दें मेहदी ने आखिरी टेस्ट मैच की दूसरी पारी में भारत के 5 अहम विकेट चटकाए और उन्होंने कोहली से मिले खास गिफ्ट की तस्वीर खुद पोस्ट कर शेयर की है। दरअसल ढाका के शेर-ए बांग्ला नेशनल स्टेडियम में खेले गए दूसरे टेस्ट मैच में बांग्लादेश के स्पिनर मेहदी हसन मिराज ने कमाल की गेंदबाजी की।

राशिफल

मेष-: तली-भुनी चीजों से दूर रहें और नियमित व्यायाम करते रहें. घरेलू सुख-सुविधा की चीज़ों पर ज़रूरत से ज़्यादा खर्च़ न करें। पिता का तल्ख बर्ताव आपको नाराज़ कर सकता है।

वृष-: जीवन की सभी कठिन परिस्थितियों में आपको अपने माता-पिता का पूरा सहयोग मिलेगा. जो लोग प्रेम के मोर्चे पर मायूस महसूस कर रहे हैं।

मिथुन-: क्षणिक क्रोध विवाद और दुर्भावना का कारण बन सकता है. मनोरंजन और सौन्दर्य वृद्धि पर आवश्यकता से अधिक समय व्यतीत न करें।

कर्क-: आज सभी ग्रह और सितारे आपके पक्ष में हैं, आप जिस भी काम में हाथ डालेंगे, उसमें आपको सफलता जरूर मिलेगी. आज के दिन यात्रा की योजना बन सकती है।

सिंह-: आपकी इच्छा शक्ति को प्रोत्साहन मिलेगा, क्योंकि आप बहुत उलझी हुई परिस्थितियों से निकलने में क़ामयाब रहेंगे. भावनात्मक फ़ैसले लेते समय अपनी तार्किकता को न छोड़ें।

कन्या-: प्रेम के मामले में सफलता मिलेगी. नए कार्यों की शुरुआत करना शुभ रहेगा। आज अपने प्रिय के साथ अपनी व्यक्तिगत भावनाओं और गोपनीय मामलों को साझा करने का सही समय है।

तुला-: जो लोग आपके पास कर्ज के लिए आते हैं, बेहतर होगा आप उन्हें नजरंदाज करें. पारिवारिक मोर्चे पर चीज़ें अच्छी रहेंगी और आप अपनी योजनाओं को पूरा समर्थन मिलने की उम्मीद कर सकते हैं।

वृश्चिक-: छात्रों के लिए दिन अनुकूल है क्योंकि प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिल सकती है। जमीन-जायदाद संबंधी कार्य स्थगित करना आपके हित में रहेगा।

धनु-: इससे पहले कि नकारात्मक विचार मानसिक रोग का रूप लें, आपको उन्हें समाप्त कर देना चाहिए. आप किसी परोपकारी कार्य में हिस्सा लेकर ऐसा कर सकते हैं।

मकर-: लंबे समय से चली आ रही दिक्कतों से आज आपको छुटकारा मिल सकता है. आगे बढ़ने के बजाय अपने सभी आगामी कार्यों को पूरा करना ही समझदारी होगी।

कुंभ-: भावनात्मक रूप से बहुत अच्छा दिन नहीं रहेगा. आर्थिक समस्याओं के कारण आपको आलोचना और वाद-विवाद का सामना करना पड़ सकता है।

मीन-: आज आप सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहेंगे, जिसका असर आपके आसपास के लोगों पर भी पड़ेगा. खुद के काम से समय निकालकर परिवार के साथ अधिक समय बिताना संभव नहीं होगा।

सम्पादकीय

आतंक की चिंतित करती चुनौती, कन्हैयालाल-उमेश कोल्हे की हत्या को हल्के में लेने वालों के लिए चेतावनी

नुपुर शर्मा विवाद के बाद दो हत्याओं ने पूरे देश में सनसनी फैला दी थी। अब उनसे संबंधित आरोपपत्र न्यायालय में प्रस्तुत किए जा चुके हैं। महाराष्ट्र के अमरावती में उमेश कोल्हे और राजस्थान के उदयपुर में कन्हैयालाल की हत्या से संबंधित आरोपपत्रों से स्पष्ट हो जाता है कि ये तात्कालिक गुस्से में की गई हत्याएं नहीं थीं। हत्यारे और हत्या की साजिश रचने वाले कट्टरपंथी इस्लामी विचारधारा वाले समूहों से जुड़े थे। कोल्हे की हत्या में राष्ट्रीय जांच एजेंसी यानी एनआइए ने पाया कि सभी आरोपित तब्लीगी जमात से जुड़े थे तो कन्हैयालाल के हत्यारे दावत-ए-इस्लामी से। ये आतंकी माड्यूल की तरह काम कर रहे थे। कन्हैयालाल की हत्या में दो पाकिस्तानियों का नाम भी आरोपपत्र में हैं। वास्तव में ये आरोपपत्र उन लोगों के लिए चेतावनी जैसे होने चाहिए, जो ऐसे जघन्य हत्याकांडों पर भी राजनीति कर रहे थे। कुछ लोगों ने यह कहकर इसे हल्का करने प्रयास किया कि नुपुर की पैगंबर साहब पर टिप्पणी से गुस्से में आकर उन्होंने ऐसा किया होगा। हालांकि सामान्य अवस्था में इस तरह कोई गला नहीं काटता। यह वही करने की हिम्मत जुटाएगा, जिसमें यह भाव भरा गया हो कि इस्लाम के विरोध को सहन करना मजहब विरोधी आचरण है तथा ऐसे विरोधियों की हत्या ही मजहब की सेवा है। ऐसा वही कर सकते हैं, जो पुरजोर तरीके से यह नारा लगाते हैं कि 'गुस्ताख-ए-रसूल की एक ही सजा, सिर तन से जुदा, सिर तन से जुदा।' इन दोनों हत्याओं की अभी तक हुई जांच के आधार पर प्रस्तुत आरोपपत्रों ने इस बात को सच साबित किया है। अमरावती में उमेश कोल्हे की हत्या 21 जून तथा उदयपुर में कन्हैयालाल की हत्या 28 जून को हुई थी। कन्हैयालाल की हत्या उसकी दुकान में दिनदहाड़े घुसकर की गई और हत्यारों ने उसका वीडियो भी जारी किया। वीडियो ने लोगों को आतंकित कर दिया था। वहीं, उमेश कोल्हे जब अपनी दुकान से लौट रहे थे तो दो बाइक सवारों ने उनका पीछा किया, उन्हें रोका और धारदार हथियारों से गला काट दिया। उस समय अनुमान लगाना कठिन था कि यह वाकई नुपुर शर्मा विवाद से जुड़ी हत्या है। बाद में हत्यारों की गिरफ्तारी के साथ मामला खुला। दोनों जगह पहले राज्य पुलिस ने जांच आरंभ की, लेकिन इसमें कट्टर इस्लामी आतंकवाद की भूमिका सामने आने के साथ मामले एनआइए को सौंप दिए गए। एनआइए के आरोपपत्र में लिखा है कि ये कट्टरपंथी ही थे और भारत के भीतर और बाहर प्रसारित किए जा रहे आडियो-वीडियो संदेशों से प्रेरणा लेते थे। उदयपुर मामले से जुड़े आरोपपत्र में हत्यारों रियाज अंसारी और गौस मोहम्मद के अलावा जिन नौ लोगों को आरोपित बनाया गया, उनमें दो सलमान और अबू इब्राहिम पाकिस्तान के कराची के रहने वाले हैं। दोनों कई वाट्सएप ग्रुप के एडमिन थे, जिनमें भड़काऊ मैसेज आते थे। रियाज और गौस उससे जुड़े थे।दोनों मामलों की आरंभिक जांच से जितने तथ्य सामने आए, उससे अनुमान लग गया था कि ये कोई सामान्य मामले नहीं। आखिर कन्हैयालाल का दोष क्या था? उसके बेटे ने मोबाइल फोन पर एक पोस्ट शेयर किया, जो वायरल हो गया था। उसे जब धमकियां मिलीं, तो उसने माफी भी मांगी, लेकिन धमकी आती रही और उसकी हत्या हो गई। इसी तरह उमेश कोल्हे ने नुपुर के समर्थन का एक पोस्ट साझा किया था। आरोपितों में से एक यूसुफ खान उमेश कोल्हे का दोस्त था। उसी ने उमेश के पोस्ट को वायरल किया तथा हत्या की साजिश रची। इसके लिए बैठकें हुईं। उनमें तब्लीगी जमात के विचार रखे और तय किया गया कि उमेश कोल्हे नबी का अपराधी है और उसकी हत्या आवश्यक है। एनआइए ने स्पष्ट कहा है कि यह केवल एक साधारण हत्या नहीं थी, बल्कि अमरावती और अन्य क्षेत्रों में लोगों को आतंकित करने के लिए तब्लीगी जमात के कट्टरपंथियों की ओर से रची गई एक सुनियोजित आपराधिक साजिश थी। एनआइए की मानें तो इन कट्टरपंथियों का सोच था कि ऐसा करने से लोगों में डर पैदा होगा। आरोपपत्र के अनुसार जांच में स्पष्ट हो गया कि तब्लीगी जमात के कट्टरपंथियों ने उमेश कोल्हे की हत्या विभिन्न जातियों और धर्मों के बीच दुश्मनी को बढ़ावा देने के लिए की थी। तब्लीगी जमात एक सुन्नी संगठन है।

घातक सिद्ध होती आगे निकलने की होड़, अब आत्महत्याओं के लिए कुख्यात हो रहा कोटा शहर

छात्रों द्वारा की गई आत्महत्याओं से जुड़ी नेशनल क्राइम रिकार्ड ब्यूरो की एक रिपोर्ट हाल में आई है। इसके अनुसार 2022 में छात्रों ने सबसे अधिक आत्महत्याएं की हैं। 2021 के मुकाबले छात्रों की आत्महत्याओं में इस साल 4.5 प्रतिशत वृद्धि दर्ज हुई। आंकड़े यह भी बताते हैं कि 2016 से 2021 के बीच छात्र आत्महत्या के मामलों में 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। इस साल महाराष्ट्र और तमिलनाडु की तुलना में छात्रों ने राजस्थान के कोटा में सबसे अधिक आत्महत्याएं की हैं। इस साल अकेले कोटा में ही अब तक 15 आत्महत्याएं हुई हैं। विगत एक सप्ताह में वहां प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे तीन नाबालिग छात्रों ने परीक्षा के दबाव में आत्महत्या कर ली। उनमें दो बिहार से थे और कोटा में आसपास रहते हुए इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। इन दोनों ने फांसी लगाकर जान दी। तीसरा छात्र मध्य प्रदेश से था, जो नीट परीक्षा की तैयारी कर रहा था। उसने जहर खाकर जान दे दी। निश्चित ही देश एवं समाज के सामने यह गंभीर चिंता का विषय है।सच यह है कि विगत चार दशकों में कोटा में कोचिंग संस्थान एक उद्योग का रूप ले चुके हैं। इसका कुल सालाना बजट तकरीबन दो से तीन हजार करोड़ रुपये का है। कोटा के ये कोचिंग संस्थान आज लाखों की रोजी-रोटी का साधन तो बने ही हैं। साथ ही देश के तमाम टेक्नोक्रेट अपने-अपने सम्मानजनक तकनीकी संस्थान छोड़कर आज इन संस्थानों से जुड़ रहे हैं। कोटा में ऐसी फैकल्टी का वेतन 20 से 30 लाख रुपये सालाना है, लेकिन ऐसा लगता है जैसे कोटा परीक्षा की तैयारियों के साथ-साथ अब आत्महत्याओं का हब भी बन रहा है। कोटा में जिस प्रकार बच्चों में आत्महत्या करने का ग्राफ बढ़ रहा है उससे अब कोटा की कोचिंग व्यवस्था पर सवाल उठने शुरू हो गए हैं। पिछले पांच वर्षों में कोटा में 77 बच्चे आत्महत्या कर चुके हैं। कोटा पुलिस से जुड़े आंकड़े बताते हैं कि 2011 में छह, 2012 में 11,

2013 में 26, 2014 में 14, 2015 में 20, 2016 में 17, 2018 में 19 तथा 2019 में 18 बच्चों ने खुदखुशी की। कोटा की कोचिंग व्यवस्था को देखकर भविष्य में इन घटनाओं के और अधिक बढ़ने की आशंका है। कोटा में हर वर्ष तकरीबन डेढ़ लाख किशोर विभिन्न कोचिंग संस्थानों में प्रवेश लेते हैं। उनका सपना उच्च प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने और उसको उत्तीर्ण करने से जुड़ा होता है। उनकी कोचिंग पर प्रत्येक अभिभावक हर वर्ष औसतन ढाई से तीन लाख रुपये खर्च करते हैं। कई मामलों में अभिभावक कोचिंग की फीस बैंक या अन्य जगहों से ऋण लेकर भी चुकाते हैं। इसलिए कई बार कोचिंग से जुड़े ये छात्र अपने परिवार की कमजोर आर्थिक स्थिति को लेकर भी काफी दबाव में रहते हैं। कई अध्यापक कोचिंग में अच्छा प्रदर्शन करने वाले प्रतियोगी छात्रों को अग्रिम पंक्ति में बैठाकर उन पर अधिक ध्यान देते हैं। दूसरी ओर जो छात्र कोचिंग में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते, उनके साथ बहुत डांट-डपट करते हैं। देखने में आया है कि कभी-कभी अध्यापक ऐसे कमजोर बच्चों का बैच भी अलग कर देते हैं। कई बार कोचिंग संचालक एवं शिक्षक ऐसे कमजोर बच्चों के अभिभावकों को केंद्र पर बुलाकर उनकी कमियों को सबके सामने उजागर करते हैं और उन्हें वापस ले जाने की बिन मांगी सलाह भी देते हैं। कहने की जरूरत नहीं कि भय का यह मनोविज्ञान इन बच्चों को निराशा से भर देता है। अपने परिवारों से दूर रहकर कोचिंग करने वाले ये छात्र एक अनजान और नए परिवेश को आत्मसात करने में भी कठिनाई महसूस करते हैं। साथ ही प्रतियोगिता की तीव्र होड़ से उपजने वाली निराशा को कम करने में परिवार और कोचिंग संस्थानों से संवाद का अभाव उन्हें अपने जीवन से हारने को मजबूर करता है। रही-सही कसर बाकी प्रतियोगी छात्रों की असफलता पूरा कर देती है। असल में इन प्रतियोगी परीक्षाओं में कोचिंग के बावजूद सफलता का प्रतिशत लगभग 10 प्रतिशत के आसपास ही रहता है। केंद्र सरकार ने कोटा में इन प्रतियोगी छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति का अध्ययन करने के लिए छह सदस्यीय समिति का गठन भी किया था, परंतु हाल-फिलहाल इन बच्चों को इस दबाव और तनाव से मुक्त करने के लिए जरूरी यह है कि ये कोचिंग संस्थान अपने यहां एक मनोचिकित्सक के साथ-साथ एक काउंसलर और फिजियोलाजिस्ट की भी भर्ती करें। साथ ही इन बच्चों के अभिभावकों की भी काउंसिलिंग करें, जिससे वे अपने बच्चों की समय-समय पर कार्य निष्पादन क्षमता को जान सकें। इसके साथ-साथ इन बच्चों को लगातार कोचिंग के बीच में कुछ समय उनको मुक्त करते हुए योगाभ्यास इत्यादि से जोड़ना भी बहुत जरूरी है। छात्रों की लगातार चिकित्सा जांच के साथ उनके मनोरंजन की व्यवस्था और उनके कोचिंग शुल्क में भी किस्तों की व्यवस्था करने से बच्चों के मानसिक दबाव में कमी आने की संभावना है। वर्तमान गलाकाट प्रतिस्पर्धा के इस दौर में व्यक्तिगत लक्ष्य प्राप्ति की होड़ शैक्षिक संवेदनाओं को निगल रही है। रातों-रात लक्ष्य प्राप्ति की होड़ ने तो शैक्षिक मूल्यों को ही ध्वस्त कर दिया है। ऐसे में माता-पिता की जिम्मेदारी बनती है कि वे अपने बच्चों की शैक्षिक क्षमता का समय रहते आकलन करें। यह इन कोचिंग संस्थानों की भी जिम्मेदारी है कि वे खुद कोचिंग की इस व्यवसायी संस्कृति से बाहर आकर इन छात्रों को भी इस उपभोक्ता बाजार के चंगुल से बाहर निकालें और सच्चे अभिभावक की भूमिका अदा करें। तभी ये बच्चे कोचिंग के दबाव से बाहर निकलेंगे और उनके सुरक्षित और सुखद भविष्य का सपना साकार हो सकेगा।

वैश्विक नेतृत्व के लिए तैयार भारत, प्रासंगिक हो रहा 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' का विचार

जी-20 इन दिनों चर्चा में है। दिसंबर में ही भारत ने इस वैश्विक समूह की कमान संभाली है। अध्यक्षता संभालने के अवसर पर प्रधानमंत्री मोदी ने 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के मंत्र का आह्वान किया। उन्होंने इसके पीछे की संकल्पना का भी उल्लेख किया, 'कोई विकसित दुनिया और कोई तीसरी दुनिया नहीं' और 'एक विश्व' कहने का यही आशय है कि समूची मानवता 'एक परिवार' के रूप में साझा समृद्धि करे और अशक्त पक्ष को 'एक भविष्य' के लिए सहारा देकर सशक्त बनाया जाए। ये सभी बातें तो प्रशंसनीय हैं, लेकिन वास्तविक राजनीतिक प्रकृति को देखते हुए सवाल उनके फलदायी होने को लेकर जुड़ा है। भूराजनीतिक हलचल, दक्षिणपंथी राजनीति, उद्दंड तानाशाही और आर्थिक राष्ट्रवाद जैसी दुर्दांत चुनौतियां इस राह में कुछ बड़े अवरोध के रूप में दिखती हैं। साथ ही, रूस-यूक्रेन युद्ध, कोविड महामारी का काला साया, जलवायु आपदाएं और भूमंडलीकरण से प्रत्येक स्तर पर विचलन से उपजी बेलगाम महंगाई, ब्याज दरों में तेजी का सिलसिला और निरंतर बढ़ती आर्थिक दुश्वारियां स्थिति को और बिगाड़ने वाली हैं। संप्रति विश्व समुदाय के लिए गंभीर चुनौतियां हैं। विकसित अर्थव्यवस्थाओं में राजनीतिक विमर्श भी आर्थिक वृद्धि के प्रति उदासीनता को दर्शाने वाला है। यहां कुछ तथ्यों की पड़ताल उपयोगी होगी। पिछली सदी के नौवें दशक के मध्य से 2007 के बीच की अवधि को 'व्यापक समभाव' का दौर माना जाता है, जब दुनिया की अर्थव्यवस्थाएं वृद्धि की ओर उन्मुख हो रही थीं, जिसमें करोड़ों लोगों को भयावह गरीबी और अभावग्रस्तता के दुष्चक्र से बाहर निकाला गया। व्यापक भूराजनीतिक शांति, संयमित राजनीतिक नेतृत्व, कम मुद्रास्फीति, निचली ब्याज दरें, भूमंडलीकरण की गहरी होती पैठ और पूंजी के मुक्त प्रवाह जैसे पहलुओं ने इसमें प्रभावी भूमिका निभाई। डेविड रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ सिद्धांत साकार होता दिखने के साथ ही आर्थिक वृद्धि पर भी सार्वभौमिक ध्यान केंद्रित था। दुर्भाग्यवश, ये पहलू अब कमजोर पड़ रहे हैं और दुनिया भर में आर्थिक मुश्किलें एवं असमानता बढ़ती दिख रही है। विकसित देशों में कामकाजी आबादी, विस्थापन और महिलाओं की व्यापक भागीदारी के साथ ही तकनीकी उन्नयन ने कुल कारक उत्पादकता यानी टीएफपी की वृद्धि में अहम योगदान दिया। टीएफपी कामकाजी आबादी के ज्ञान में आए परिवर्तन और तकनीकी प्रगति के प्रभाव का आकलन करता है। इसके माध्यम से किसी आर्थिक प्रणाली में दीर्घकालिक उत्पादन पर इन परिवर्तनों के प्रभावों के आकलन का प्रयास होता है। फिलहाल जननांकीय स्थिति प्रतिकूल हो रही है, विस्थापन को रोका जा रहा है और महिलाओं की भागीदारी चरम पर पहुंच गई है। कोविड ने काम को लेकर हिचक बढ़ाई है। तकनीकी सुधार अपनी एक सीमा में ही योगदान कर पा रहे हैं। स्मरण रहे कि विकासशील देशों को आउटसोर्सिंग, पूंजी के पर्याप्त प्रवाह और तकनीकी विकास की साझेदारी से लाभ पहुंचा। वहीं, समग्र वैश्विक अर्थव्यवस्था भूराजनीतिक शांति, नरम मुद्रास्फीति, निम्न ब्याज दरों और सस्ते श्रम, ऊर्जा, धातुओं और खनिजों की आपूर्ति से लाभान्वित हुई। जब आर्थिक वृद्धि और लोगों की बेहतरी पर खतरा मंडरा रहा हो तो पारंपरिक संवादों और परिचर्चाओं की सार्थकता संदिग्ध होने लगती है। एक ऐसे दौर में जब दुनिया कुछ इसी प्रकार की परिस्थितियों से दो-चार हो, तब विकसित विश्व और तीसरी दुनिया के देशों को 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के सूत्र में पिरोने वाला भारत का विचार और प्रासंगिक हो गया है। ऐसे में सभी बैठकों के मूल में यही बात होनी चाहिए कि हम सभी एक ही नाव पर तैर रहे हैं और नैया पार लगने पर सभी को सहयोग का बराबर लाभ मिलेगा। स्पष्ट है कि आर्थिक राष्ट्रवाद से आर्थिकी के स्तंभों को आघात नहीं पहुंचना चाहिए। इसके बजाय उसे आर्थिकी से जुड़े जोखिमों को दूर कर उसे सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। ऐसे में समय की आवश्यकता है कि सामाजिक असंतोष और आर्थिक गतिरोध को रोकते हुए लोगों, पूंजी और वस्तुओं एवं सेवाओं की मुक्त आवाजाही के साथ ही तकनीकी साझेदारी का सिलसिला कायम रहना चाहिए। दुनिया के किसी भी हिस्से में छिड़ा कोई संघर्ष पूरी दुनिया को प्रभावित करने में सक्षम हैं। रूस-यूक्रेन टकराव इसका ज्वलंत उदाहरण है। ऐसे में प्रधानमंत्री मोदी का यह उद्गार कि 'यह युद्ध का युग नहीं' को लेकर वैश्विक सहमति बने, जो न केवल इस युद्ध पर तत्काल विराम लगाए, बल्कि भविष्य के किसी भी टकराव को रोकने से लिए ढांचे को और सशक्त बनाए। इस समय दक्षिणपंथी राजनीति, आर्थिक राष्ट्रवाद, भूराजनीतिक टकराव, हठधर्मी नेतृत्व और संवाद एवं सहयोग के प्रति अनिच्छा जैसे पहलू असमानता और अभाव जैसी स्थितियों को एक बड़ी हद तक प्रभावित कर रहे हैं। आर्थिक वृद्धि के कुछ उत्प्रेरक भी असमानता एवं अभाव की स्थिति निर्मित करने में योगदान करते हैं। ऐसे में स्थिति को सुधारने के लिए आवश्यक कदम निश्चित रूप से उठाए जाने चाहिए। पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति पृथ्वी और यहां जीवन एवं आजीविका की निरंतरता के समक्ष बड़ी चुनौती है। पर्यावरण की स्थिति में गिरावट किसी भौगोलिक क्षेत्र की आर्थिकी एवं आर्थिक समृद्धि पर निर्भर करती है। जहां पर्यावरणीय विध्वंस को रोकने की जिम्मेदारी और जवाबदेही तो सार्वभौमिक है, किंतु उसकी कीमत हैसियत के हिसाब से साझा की जानी चाहिए। इस दृष्टि से सीओपी-27 के शर्म अल-शेख सम्मेलन में जलवायु क्षरण की क्षतिपूर्ति निधि की प्रतिबद्धता को मूर्त रूप देना भी महत्वपूर्ण होगा। अब भारत के बौद्धिक वर्ग को भी जी-20 के नेतृत्व के लिए विचारों, नीतियों और कार्यक्रमों की रूपरेखा खींचकर इन आवश्यक मुद्दों पर सहमति निर्माण में महती योगदान देना चाहिए। मौजूदा मानव जाति स्वास्थ्य, संपदा और जीवन की गुणवत्ता के अप्रत्याशित चक्र में जी रही है। यह उसका दायित्व है कि वह आने वाली पीढ़ियों को बेहतर जीवन गुणवत्ता की विरासत-सौगात सौंपे।

भारत की भूमिका के विस्तार का समय, नववर्ष में वैश्विक कूटनीति के शिखर पर भी होगा 'नया भारत'

इस साल का अब सप्ताह भर शेष रह गया है तो इस साल की पड़ताल और नववर्ष से उम्मीदों का आकलन बहुत स्वाभाविक है। इस साल महामारी से लगभग मुक्ति मिल चुकी थी, लेकिन वर्ष बीतते-बीतते चीन से कुछ खतरनाक संकेत सामने आने लगे हैं। फरवरी में यूक्रेन और रूस के बीच छिड़े युद्ध के भी वर्षांत

तक शांत पड़ने के कोई आसार नहीं दिख रहे। इस युद्ध ने पूरी दुनिया में राजनीतिक एवं आर्थिक समीकरण बिगाड़ दिए। दिसंबर 2022 में जारी विश्व बैंक की रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक प्रतिकूलताओं से निपटने के लिए भारत अच्छी तरह से तैयार है। यह इसीलिए संभव हुआ, क्योंकि बीते आठ वर्षों में 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' सहित तमाम नीतियां फलदायी सिद्ध हुई हैं। क्रय शक्ति समानता (पीपीपी) के स्तर पर विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनना अनुकूल आर्थिक नीतियों का ही परिणाम है। निवेशकों के लिए भारत आकर्षक स्थल बना हुआ है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा 'महामारी, गरीबी और असमानताः भारत से मिले साक्ष्य' शीर्षक से जारी रिपोर्ट में कहा गया है कि 'प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना की सहायता से अत्यधिक गरीबी का स्तर घटकर 0.8 प्रतिशत पर आ गया है।' यह आकलन वर्ष 2004-05 से कोराना काल वाले 2020-21 के बीच का है। निःसंदेह कोरोना काल में गरीबी घटाने के सरकारी प्रयासों को झटका लगा, किंतु आइएमएफ की रिपोर्ट संकेत करती है कि तालाबंदी से रोजगार छिन जाने और विस्थापित होकर गांव-देहात पहुंचे कामगार निराश्रित नहीं थे। सरकारी सहायता ने भी उन्हें बड़ा सहारा दिया। यह सहजता से कहा जा सकता है कि घरेलू स्तर पर अपनी नींव सुदृढ़ करने के साथ 'नया भारत' नववर्ष में वैश्विक कूटनीति के शिखर पर भी होगा। सितंबर 2023 तक भू-राजनीतिक, आर्थिक, सुरक्षा से संबंधित संगठन 'शंघाई सहयोग संगठन' और शक्तिशाली आर्थिक समूह 'जी-20' की नवंबर 2023 तक भारत अध्यक्षता करेगा। यह हमारे देश की ताकत है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की टिप्पणी 'यह युद्ध का दौर नहीं' वैश्विक विमर्श के केंद्र में रही।

संक्षिप्त समाचार

हैदराबाद पुलिस ने अंतरराज्यीय ड्रग पेडलर को किया गिरफ्तार

(आधुनिक समाचार सेवा)
हैदराबाद। हैदराबाद के पुलिस अधिकारियों ने एक सप्लायर के अवैध संचालन का भांडाफोड़ किया है। आरोपी व्यक्ति से 31 किलोग्राम वजनी गांजा चॉकलेट के 164 पैकेट जब्त किए हैं। पुलिस उपायुक्त राधा किशन के अनुसार, गिरफ्तार व्यक्ति की पहचान मोहम्मद जफर उर हक के रूप में हुई है। पुलिस के मुताबिक आरोपी बिहार के सितामढ़ी जिले के पुपरी शहर से अवैध सामान लाया था और गांजा चॉकलेट बना कर व्यापार करना शुरू किया था। पुलिस की पूछताछ में पता चला

कि आरोपी मोहम्मद जफर उर हक ने गांजा वाली चॉकलेट बिहार से लाने की योजना बनाई थी। जिसके बाद उसने वह चॉकलेट को बिहारियों और अपने परिचित व्यक्तियों को बेचना शुरू कर दिया था। वह चॉकलेट गांजा का कारोबार हैदराबाद के मेहदीपटनम में स्थानीय लोगों को 20-50 रुपये में बेच कर करता था। इससे वह आसानी से पैसा कमाता है। लेकिन अब आरोपी पुलिस की गिरफ्त में है। पुलिस ने जब्त सामग्री के साथ आरोपी को आगे की जांच के लिए एसएचओ, आसिफ नगर पीएस, हैदराबाद को सौंप दिया है। हैदराबाद पुलिस ने आरोपी से कई चीजें भी बरामद की है। जब्त की गई वस्तुओं में चारमीनार गोल्ड मुनक्का के 62 पैकेट और प्रत्येक पैकेट में लगभग 14 किलोग्राम वजन की 40 चॉकलेट पाई गई हैं। इसके अलावा विजया वटी के 61 पैकेट जिसके हर पैकेट में 40 चॉकलेट हैं और उनका वजन लगभग 14 किलोग्राम है। पुलिस ने आरोपी से आरडी शिवा मुनक्का के 14 पैकेट भी जब्त किए हैं। जिसके प्रत्येक पैकेट में 40 चॉकलेट हैं शामिल हैं।

श्री मद् भागवत कथा मे अमर कथा का वर्णन

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । बरौला में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा के दूसरे दिन कथा व्यास आचार्य महेन्द्र उपाध्याय

महाराज ने अमर कथा का रोचक वर्णन किया। भगवान शिव माता पार्वती को अमर कथा सुना रहे हैं , माता को कथा सुनते सुनते नींद आ जाती है और उनकी जगह एक तोता हुंकारी भरने लगता है। जब शिव जी को पता चला कि एक पक्षी चोरी छुपे कथा का श्रवण कर रहा है तो उन्होंने शुक को मारने के लिए त्रशूल लेकर उसके पीछे दौड़े। तीनों लोकों में भागता शूक व्यास जी के आश्रम पहुंचा और उनकी पत्नी के मुख से गर्भाशय में पहुंच गया जहां वह बारह वर्ष तक रहे। पिता व्यास जी ने प्रार्थना की बेटा बाहर आ जाओ उन्होंने कहा कि बाहर माया का जाल है इसलिए बाहर नहीं आऊंगा। भगवान कृष्ण के आश्वासन के बाद जन्म लिया। जन्म लेनें के बाद वह तपस्या के लिए वन चले गए। कथा के तीसरे दिन ध्रुव चरित्र, जड़ भरत की कथा, वामन अवतार आदि कथाओं का व्यास जी द्वारा वर्णन किया जाएगा। कथा रोजाना 3 बजे से 7 बजे तक हो रही हैं। आप सभी भगवत चरण अनुरागी भक्तजन कथा में पधारकर कथा रूपी अमृत का पान अवश्य करें।

दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग के द्वारा दिव्यांगजनों के हितार्थ विभिन्न योजनाएं संचालित

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी गौतम बुद्ध नगर आशीष कुमार सिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि दिव्यांगजनों के लिए राज्य निधि की स्थापना की गई है। उन्होंने बताया कि राज्य निधि से दिव्यांग जनों के हितार्थ चार प्रकार की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जा रही, जिसमें उत्तर प्रदेश के दिव्यांगजन द्वारा बनाए गए चित्रों, हस्तकला आदि सहित उत्पादों को प्रदर्शित करने के लिए प्रदर्शनी एवं कार्यशालाओं के लिए धनराशि सहायता के रूप में उपलब्ध कराना, उत्तर प्रदेश के दिव्यांगजन खेल/ ललिकला/संगीत/ नृत्य/ फिल्म/ थिएटर/ साहित्य जैसे क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हो, उन्हें राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में प्रतिभाग किए जाने एवं खेल आयोजन के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध कराना, दैनिक जीवन के गतिविधियों को बेहतर बनाने के लिए बैचमार्क दिव्यांगता के व्यक्तियों को उच्च सहायता वाले उपकरण उपलब्ध कराना, उत्तर प्रदेश के दिव्यांगजन जो गंभीर बीमारियों जैसे कैंसी, थेलीसिमिया प्लास्टिक, एनीमिया बहुस्कालोरोसिस से ग्रसित हो अथवा आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना एवं मुख्यमंत्री जन आरोग्य योजना से आच्छादित न हो, को चिकित्सा के लिए वित्तीय सहायता आदि सम्मिलित हैं। उन्होंने बताया कि जो दिव्यांगजन उपरोक्त योजनाओं का लाभ उठाना चाहते हैं वह अपना प्रस्ताव अधोहस्ताक्षरी कार्यालय को तत्काल उपलब्ध कराएं एवं योजना के संबंध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कार्यालय जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी कमरा नंबर 107 विकास भवन गौतम बुद्ध नगर में संपर्क कर सकते हैं।

भाजयुमो 27 दिसंबर को करेगा अटल भाषण प्रतियोगिता का आयोजन :- रामनिवास यादव

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । भारतीय जनता युवा मोर्चा नोएडा महानगर ने कैंप कार्यालय सेक्टर 122 पर अटल भाषण प्रतियोगिता के उपलक्ष्य में प्रेस कांफ्रेंस का आयोजन किया। स्प्रेस

कॉन्फ्रेंस के मुख्य अतिथि भाजयुमो प्रदेश मंत्री अमल खटीक , भाजयुमो जिला अध्यक्ष रामनिवास यादव, जिला महामंत्री मोहित शर्मा, अनुज प्रधान, जिला मीडिया प्रभारी अर्पित मिश्रा ने संबोधित किया। प्रेस कांफ्रेंस का सफलतापूर्वक संचालन भाजयुमो जिला मीडिया प्रभारी अर्पित मिश्रा ने किया। भारत रत्न स्वर्गीय श्री अटल बिहारी बाजपेई की जयंती मनाने के लिए भारतीय जनता युवा मोर्चा ठभाजयुमो अटल डिबेट क्लबठ का शुभारंभ करेगा। जनमानस से संवाद करने के लिए अटल जी की अविश्वसनीय वाकपटुता देश के लिए एक प्रेरणा स्रोत रही है और भारतीय जनता युवा मोर्चा ठअटल डिबेटिंग क्लबठ के माध्यम से उनका सम्मान करने का प्रयास करेगा।। भारतीय जनता पार्टी 27 दिसंबर को नोएडा में डीएमई (दिल्ली मेट्रोपोलिटन एजुकेशन) कॉलेज सेक्टर 62 में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन कर रही है। इस प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को क्षेत्र में भाषण प्रतियोगिता में भागीदार बनने का अवसर प्राप्त होगा, क्षेत्र में प्रथम तीन स्थान प्राप्त करने वाले विजेताओं को लखनऊ में प्रदेश के सभी क्षेत्र के विजेताओं के साथ भाषण प्रतियोगिता में भागीदार बनने का अवसर प्राप्त होगा तथा प्रदेश में संपन्न होने वाली भाषण प्रतियोगिता में प्रथम तीन स्थान निश्चित करने वाले प्रतियोगियों को वरीयता के अनुसार विजेता घोषित किया जाएगा।

भारत रत्न स्व अटल बिहारी वाजपेयी की जयंती पर हुआ कंबल वितरण का शुभारंभ

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन एवं एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ऑफ़

हैंडीक्राफ्ट व सांस्कृतिक प्रकोष्ठ (भाजपा) नोएडा द्वारा भारत रत्न पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी का 98वाँ जन्मदिवस सुशासन दिवस के रूप में मनाया गया, इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम के साथ साथ जरूरतमंद, निर्धन लोगों के लिए कंबल वितरण कार्यक्रम भी रखा गया। हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन के अध्यक्ष सी.पी. शर्मा ने बताया कि सर्दी का आगाज हो चुका है और हमारे देश में एक तबका ऐसा भी है जिसके पास ठंड से बचने के पर्याप्त साधन नहीं है इसलिए हमारी संस्था ने निर्णय लिया कि लगभग 8000 कंबल निर्धन वर्ग के लोगों को सर्दी से बचाने के लिए बांटे जाएंगे। यह पावन कार्य भाजपा के सांस्कृतिक प्रकोष्ठ के सहयोग से किया जाएगा। भाजपा नोएडा महानगर के अध्यक्ष मनोज गुप्ता ने बताया कि आज देश के पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी जी के जन्मदिन को सुशासन दिवस के रूप में मनाया जाता है वह जितने अच्छे कवि थे, उतने ही अच्छे शासक थे। उन्होंने कहा कि हमारे शहर में ऐसे भी बच्चे हैं जिनके पास ठंड से बचने के लिए स्वेटर नहीं है इसलिए स्थानीय विधायक के सौजन्य से 1000 स्वेटर का प्रबंध किया गया है जिन्हें महिला मंडल की अध्यक्षा गिरजा सिंह और उनकी महिला टीम द्वारा बच्चों को चिन्हित कर वितरण किए जाएंगे। हैंडलूम हैंडीक्राफ्ट एक्सपोर्टर वेलफेयर एसोसिएशन ने लगभग 8000 कंबल का प्रबंध किया है जिन्हें भाजपा के कार्यकर्ताओं द्वारा रात में जरूरतमंद लोगों तक पहुंचाने का कार्य किया जाएगा। उन्होंने बताया कि जिला अस्पताल के सभी मरीजों को कंबल उपलब्ध कराए जाएंगे। वही नारी निकेतन में जहां निराश्रित महिलाएं रहती है उनको भी कंबल उपलब्ध कराए जाएंगे। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया जिसमें छोटे-छोटे बच्चों ने मनमोहक प्रस्तुतियां दी।

नोएडा प्रिया गोल्ड कम्पनी के पास पटरी वाले दुकानदार हुए बरोजगार

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । सेक्टर 2 नोएडा में प्रिया गोल्ड कम्पनी के बगल में 30 वर्षों

से पटरी पर अपनी दुकान लगा कर अपने बच्चों का पालन-पोषण करने वाले दुकानदार नोएडा विकास प्राधिकरण में कार्यरत अधिकारियों की ताना शाही के चलते बेरोजगार हो गए हैं पटरी के दुकानदारों का कहना है कि नोएडा विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के द्वारा हमारे साथ अभद्र व्यवहार किया जा रहा है नोएडा विकास प्राधिकरण के अधिकारी उनकी दुकानों पर आते है और उन्हें भददी भददी गालियां देते है और उनका सामान उठा कर ले जाते हैं तथा उन्हें धमकी भी देते है कि पटरी पर दुकान लगाओगे तो हम तुम्हें जेल भिजवा देंगे वैंडिग जोन योजना के सभी नियमों को ताक पर रखकर नोएडा विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने उनकी दुकाने बिल्कुल ही बन्द करवा दी जिससे लोग पूर्ण रूप से बेरोजगार हो गए हैं और उनके तथा उनके परिवार के सामने भूखे मरने की नौबत आ गई है ।पटरी के दुकानदारों की पीडा है कि अब इस कड़ाके की ठंड में वे लोग कहा जाए पटरी पर दुकान लगाने के अलावा उनके पास कोई रोजगार नहीं है जिस स्थान पर वे लोग अपनी दुकान लगाते है उस स्थान पर दुकान लगाने के लिए और वैंडिग जोन बनाने के लिए पर्याप्त स्थान है दुकानदारों ने नोएडा विकास प्राधिकरण के मुख्य कार्य पालक अधिकारी को ज्ञापन प्रार्थना पत्र दिया है। जिसमें पटरी के दुकानदारों ने मांग की है कि वैंडिग जोन योजना के अन्तर्गत जिस स्थान पर वे अपनी दुकान लगाते है उस स्थान का निरीक्षण कर उसी जगह पर उनके लिए वैंडिग जोन बनाया जाए और उन्हें दुकाने उपलब्ध कराई जाए तथा जब तक उन्हें दुकाने उपलब्ध नहीं कराई जाती तब तक उन्हें यथा स्थान पर दुकाने लगाने दिया जाए साथ ही उन्होंने यह भी मांग की हैं की उनके साथ अभद्र करने तथा उनकी दुकाने बन्द कराकर उन्हें बेरोजगार करने वाले नोएडा विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही भी की जाए पटरी के दुकानदारों ने मुख्य कार्य पालक अधिकारी के अलावा जिलाधिकारी गौतमबुद्धनगर, पुलिस आयुक्त गौतमबुद्धनगर,एल आई यू अधिकारी नोएडा, तथा पटरी खोखा ठेली कल्याण सेवा संस्थान के जिला सचिव को भी अपनी समास्याओं के समाधान के लिए मांग पत्र की प्रति लिपि भेजी है ज्ञापन देने के वक्त प्रीतम सिंह, विश्वनाथ साह, पप्पू साह, सुबोध साह, पार्वती देवी, अहमद नवी, जेनुदीन , कुंवरपाल, तथा अंकुश कुमार उपस्थित रहे।

एशिया महिला वर्ल्ड चैम्पियन को नहीं मिल रहा सरकार से सहयोग

(आधुनिक समाचार सेवा)
नोएडा । मीडिया क्लब में आयोजित प्रेसवार्ता में उर्वशी सिंह ने कहा कि मैं देश के लिए खेल

रही हूँ और आगे भी खेलती रहूंगी, ओलम्पिक में खेलना मेरा सपना है लेकिन सरकार की तरफ से अभी तक मुझे कोई सहयोग नहीं मिला है। उर्वशी सिंह ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री महिलाओं और बेटियों को आगे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैंए मुझे भी प्रधान मंत्री मोदी से ढेर सारी उम्मीदें हैं और मैं आशा करती हूँ प्रधानमंत्री मुझे ओलमिक में भेजने में सहायता अवश्य करेंगें। मैं पैसे के लिए नहीं अपने देश के लिए खेलना चाहती हूँ। सपने तो सभी देखते हैं लेकिन पूरा उन्हीं का होता है जिनके हौसले फौलाद के और इरादे बुलंद होते हैं। सुविधाओं और संसाधनों के आभाव में मध्यम वर्गीय परिवार की बेटी उर्वशी सिंह ने वह करके दिखा दिया जिसके लिए देश के लाखों नौजवान रात दिन पसीना बहा रहे हैं। पूर्वी दिल्ली के मयूर विहार फेज 3 में जन्मी और गवर्नमेंट स्कूल से पढ़ी उर्वशी सिंह का बॉक्सिंग में देश के लिए खेलना एक सपना था, लडकी और बॉक्सिंग! गली मुहल्ले में लोग मजाक उड़ाते थे और परिवार के लोग भी समाज के भय से कोई निर्णय नहीं ले पा रहे थे, लेकिन उर्वशी सिंह की जिद और उसके बुलंद हौसले के सामने परिवार को झुकना पड़ा। कॉलेज ऑफ फिजिकल एजुकेशन नोएडा से कॉलेज चैम्पियनशिप में खेलते हुए उर्वशी ने पहली बार स्वर्ण पदक हासिल करके लोगों का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित किया। 2015 में नोयडा के कॉलेज ऑफ फि जिकल एजुकेशन में पढ़ाई के दौरान मिली कामयाबी ने उर्वशी सिंह को मानो पर लगा दिए हों, अब उर्वशी के प्रति परिवार और मोहल्ले वालों की सोच बदलने लगी, और उर्वशी को लोगों का समर्थन मिलने लगा, जो बॉक्सिंग लड़कियों के लिए उचित नहीं बता रहे थे वही लोग हौसला बढ़ाने लगे। उर्वशी लगातार अपनी मंजिल की तरफ बढ़ रही थीं और नित नए आयाम को हासिल कर रही थीं। इसी दौरान टीम रोशन स्पोर्ट्स और डीजे एमसी बॉक्सिंग का सहयोग मिला, जिन्होंने उर्वशी सिंह के अंदर छुपी प्रतिभा को पहचाना और उनकी बॉक्सिंग को निखारने का काम किया। उसके बाद उर्वशी सिंह ने मुड़ कर पीछे नहीं देखा। मार्च 2022 प्रथम मिडिल ईस्ट एशिया महिला वर्ल्ड चैम्पियनशिप जीत कर भारत के तिरंगे का मान बढ़ाया और देश का नाम रौशन किया। नवंबर 2022 में कोलंबिया में आयोजित डब्लू बीसी वेंटम वेट्स टाइटल्स और डब्लू बीसी एशिया सिल्वर क्राउन को भी अपने नाम किया।

शिव नाडर स्कूल के स्टूडेंट्स ने वास्तविक जिंदगी की समस्याओं को लेकर अपने अभिनव सलूशन प्रस्तावित किए

नोएडा शिव नाडर स्कूल के दसवीं क्लास के छात्रों ने कोलोक्वियम 2022 में हानिकारक टेक्नोलॉजी के माध्यम से कई बेहद जरुरी समस्याओं के समाधान पर अपने विचार प्रस्तुत किये। इस वर्ष की प्रतियोगिता की विजेता शिव नाडर स्कूल, फरीदाबाद की टीम ब्रोक्स थी, जिसमें छात्र राघव, काशवी, नीयाती, रेयर्थ और शगुन शामिल थे। टीम ने स्कूलों के लिए एक व्यक्तिगत और किफायती ब्रेल प्रिंटर डिज़ाइन करके ब्रेल साक्षरता बढ़ाने

के लिए एक प्रिंटर बनाया है। विजेता टीम को जिनेवा, स्विटज़रलैंड में सर्न (यूरोपियन ऑर्गेनाइज़ेशन फ़ॉर न्यूक्लियर रिसर्च) की तरफ से सभी खर्चों के साथ यात्रा करने का मौका मिला है। दूसरा पुरस्कार शिव नाडर स्कूल, गुरुग्राम की टीम एक्सीसेफ को मिला, जिसमें छात्र- अर्चित, सिद्धार्थ, निशा, इशिता और सार्थक शामिल थे। टीम ने दुर्घटनाओं के दौरान दोपहिया सवारों की सुरक्षा के मकसद से एक रक्षात्मक एयर वेस्ट बनाया है। वार्षिक सम्मेलन एक साल से तकनीकी प्रोजेक्ट पर काम करने वाले छात्रों के लिए एक मंच प्रदान करता है जिससें वो वास्तविक दुनिया की समस्या को संबोधित कर पाए। इस मौक़े पर बोलते हुए, शिव नाडर स्कूल में प्रौद्योगिकी के प्रमुख, मार्क नेल्सन ने कहा, ठशिव नाडर स्कूल में, हमारा उद्देश्य अपने छात्रों को एक ऐसा परिवेश देना है जहां वे बहु-विषयक ज्ञान को ले पाए। उन्हें वस्तिवित्ता से जुड़े ज़रूरी प्रोजेक्ट्स पर काम करवाकर -दुनिया की समस्याओं के लिए हम उन्हें गंभीर और विश्लेषणात्मक रूप से सोचने देने के साथ दो स्तरीय चयन प्रक्रिया का पालन करना है, जहां पहले छात्रों के प्रोजेक्ट्स की उप-जूरी द्वारा जाँचा जाता है, उसके बाद प्रोजेक्ट्स के प्रभाव और विशिष्टता को समझने के लिए एक बाहरी जूरी के साथ एक प्रस्तुति और पारस्परिक विचार-विमर्श होता है। जबकि शिव नाडर स्कूल, नोएडा, फरीदाबाद और गुरुग्राम के 60 प्रोजेक्ट्स को उप-जूरी में प्रस्तुत किया गया था, केवल सात को फाइनल जूरी राउंड के लिए चुना गया था। बाहरी जूरी में कैंशिफाई के सह-संस्थापक और सीटीओ अमित सेठी, डायसन इंडिया के प्रबंध निर्देशक अंकित जैन, यूक्लीन के संस्थापक अरुणाभ सिन्हा शामिल थे। जीतने वाले प्रोजेक्ट्स के अलावा, इस साल के संगोष्ठी में प्रदर्शित अन्य नई खोज को भी शामिल किया गया हैः 1.जेफिरस - कमजोर सामाजिक आर्थिक बैकग्राउंड वाले लोगों के लिए एक किफायती, पर्यावरण के अनुकूल और पोर्टेबल एयर कंडीशनिंग डिवाइस। इसकी ऊर्जा की खपत एसी और कूलर की तुलना में 40-60ज़ कम है।2.रिपोज - संवेदी उसकाव के माध्यम से नींद की बीमारी से पीड़ित लोगों की मदद के लिए एक एकल- डिवाइस। डिवाइस व्यापक तापमान को बनाए रखते हुए सुगंध और संगीत चिकित्सा के प्रभावों को मिलाती है, जो अच्छी नींद के लिए एक आदर्श के समान है। 3.यूट्रोज़ाइम - एक किफायती, पर्यावरण के अनुकूल और घरेलू समाधान जिसके माध्यम से जल निकायों को पूर्वरूप में लाना। इस इनोवेशन का उद्देश्य यूट्रोफिकेशन को खत्म करना है। 4.अलयना- तेजी से बदल रहे फैशन के लिए एक स्थायी समाधान के रूप में, अलयना, लोकल कारीगरों के अपने नेटवर्क के साथ जोड़कर, कपड़े के कचरे (कट्टान) को सुंदर फैशन गियर में बदल देता है। 5.ऑक्सिलियम- इंटरएक्टिव एआई रोबोट जो चिंता के स्तर को कम करने में मदद करते हैं और सर्जरी से पहले या बाद में गंभीर रूप से अस्वस्थ बच्चों के लिए स्थिर विटल्स बनाए रखते हैं। संपादक के लिए नोट्स शिव नाडर स्कूल के विषय में शैक्षिक उत्तमता प्रदान करने और जीवन के लिए शिक्षा प्रदान करने के लिए शिव नाडर स्कूल के12 निजी शिक्षा में शिव नाडर फाउंडेशन की एक गैर- लाभ कारी पहल है। एनसीआर में तीन और चेन्नई में एक कैंपस के साथ, शिव नाडर स्कूल छात्रों को एक ऐसा परिवेश प्रदान करता है जहां उन्हें अपनी प्रतिभा और कौशल की खोज करना एक चुनौती की तरह लगे, इस के अलावा उनका लक्ष्य समाज के नैतिक, सम्मानित, खुश और उद्देश्यपूर्ण नागरिकों का पोषण करना है। 5050 छात्र उनके माता-पिता, 600 शिक्षकों की टीम, शिव नादर स्कूल के परिवार का एक हिस्सा हैं।शिव नाडर फाउंडेशन के बारे मेंशिव नाडर स्कूल की स्थापना शिव नाडर, संस्थापक, एचसीएल द्वारा की गई है - जो 12.1 बिलियन डॉलर की अग्रणी प्रौद्योगिकी और स्वास्थ्य सेवा एंटरप्राइज है। फाउंडेशन का मिशन संस्थानों की स्थापना और शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में नई पहल करके राष्ट्रीय विकास और सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में अपना योगदान देना है।

ब्यौहारी महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने म.प्र. की युवा नीति के निर्माण के लिए निकाली जन जागरुकता रैली

(आधुनिक समाचार सेवा)
शहडोल ब्यौहारी। रामकिशोर शुक्ल स्मृति, शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय ब्यौहारी के द्वारा सोमवार को मध्य प्रदेश युवा नीति के निर्माण के लिए जन जागरुकता अभियान तहत विशाल रैली का आयोजन किया गया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. आर.के. तिवारी ने बताया कि मध्य प्रदेश में युवाओं को केंद्र में रखकर युवा नीति का निर्माण किया जा रहा है। इसके लिए स्थानीय स्तर पर लोगों से सुझाव मांगे जा रहे हैं। महाविद्यालय में इस हेतु एक सुझाव पेटी भी लगाई गई है। जिसमें प्राप्त सुझावों को शासन को भेजा जाएगा । इसी क्रम में जन जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। रैली नगर के प्रमुख मार्गों से होती हुई महाविद्यालय में समाप्त हुई । महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में रैली में सहभागिता की । इस अवसर पर डॉ. आर.सी. त्रिपाठी, डॉ. मोहितलाल वर्मा, डॉ. आशीष द्विवेदी, डॉ. राजेश प्रजापति, सुनील सिंह, बंशबहादुर सिंह, जगमोहन बैगा आदि महाविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी तथा सन्दीप प्रजापति, कुलदीप पाण्डेय, रश्मि शर्मा, नमी द्विवेदी, वरुणेन्द्र प्रताप सिंह, मुकेश तिवारी, अजमल आदि छात्र-छात्राओं की सक्रिय भूमिका रही ।

तुनिषा शर्मा के मामा ने किया खुलासा अभिनेत्री से रिश्ते के वक्त कई लड़कियों के संपर्क में था शीजान खान

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। अभिनेत्री तुनिषा शर्मा ने शनिवार शाम एक टीवी शो के सेट पर आत्महत्या कर ली। उन्होंने शूटिंग के लिए तैयार होते वक्त मेकअप रूप में ही अपनी जान दे दी। तुनिषा की मौत की जानकारी मिलने के बाद उनकी मां ने अभिनेता शीजान खान के खिलाफ शिकायत दर्ज कराई थी, जिसके बाद पुलिस ने शीजान खान को आईपीसी की धारा 306 के तहत गिरफ्तार कर लिया और रविवार को अदालत में पेश किया। अब इस केस जुड़ी बड़ी जानकारी सामने आ रही, जिसे जानकर आप चौंक जाएंगे। एएनआई की खबर के मुताबिक, मृत अभिनेत्री के एक रिश्तेदार ने रविवार को बताया कि इस कथित आत्महत्या मामले में आरोपी शीजान-तुनिया शर्मा के साथ रिश्ते में होते हुए भी कई लड़कियों के संपर्क में था। तुनिषा को 16 दिसंबर को पता चला की शीजान खान उसको धोखा दे रहा है, जिसके चलते वो काफी तनाव में आ गई थी और डिप्रेशन में चली गई। इसके बाद तुनिषा की मां ने भी शीजान से बात की और पूछा कि उसने तुनिषा को अचानक क्यों छोड़ दिया। जब वह रिश्ते को लेकर गंभीर नहीं था तो वो इतने क्यों करीब आया, यह सही नहीं था।अभिनेत्री के मामा पवन शर्मा ने कहा कि इस घटना के बाद से हमारे परिवार के सदस्य गहरे सदमे में हैं और हमने यकीन ही नहीं हो रहा है कि तुनिषा अब इस दुनिया में नहीं है। मुझे पुलिस पर पूरा भरोसा है जो भी आरोपी है उसको कड़ी-कड़ी से सजा मिले। एक्ट्रेस के रिश्तेदार ने एजेंसी से आगे तुनिषा शर्मा के अंतिम संस्कार के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि 27 दिसंबर को मीरा रोड इलाके में उनका अंतिम संस्कार होगा। वहीं, तुनिषा शर्मा के बाद पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बारे में बताते हुए वालीव पुलिस ने कहा कि पोस्टमार्टम में अभिनेत्री की मौत का कारण फांसी बताया गया है।जांच अधिकारी ने आगे कहा कि फिलहाल मामले की जांच चल रही है। आरोपी शीजान खान और मृतक के फोन को जब्त कर लिए गए हैं। अभी तक इस मामले में ब्लैकमेलिंग या लव जिदाह और एक्स्ट्रा अफेयर का कोई एंगल सामने नहीं आया है।बरामद नहीं हुआ सुसाइड नोट तुनिषा शर्मा की मौत की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल पर पहुंचकर दरवाजा तोड़ा तो अभिनेत्री का शव फंदे पर लटका हुआ मिला। साथ ही पुलिस ने बताया कि मौके पर जांच के दौरान कोई सुसाइड नोट बरामद नहीं हुआ और उन्होंने कहा कि वो हत्या और आत्महत्या दोनों ही पहलूओं से तुनिषा शर्मा की मौत की जांच कर रहे हैं।

क्या प्रेग्नेंट हैं कटरीना कैफ क्रिसमस की तस्वीरें देख फैंस बोले- 'आप तो बेबी बंप छुपा रही हैं

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। कटरीना कैफ और विक्की कौशल ने अपने पूरे परिवार के साथ मिलकर क्रिसमस का सेलिब्रेशन किया। इस पार्टी में उनके साथ इंडस्ट्री के उनके बेहद करीबी दोस्त भी शामिल हुए। हालांकि हर तस्वीर में कटरीना परिवार और दोस्तों के पीछे ही छुपी हुईं नजर आई। इस दौरान कटरीना की तस्वीरों को देखकर लोगों ने अंदाजा लगा लिया कि एक्ट्रेस प्रेग्नेंट हैं। ढेर सारे लजीज खाने का आनंद लेते हुए कटरीना और विक्की ने शादी के बाद अपनी दूसरा क्रिसमस सेलिब्रेट किया। कैटरीना ने एक तस्वीर शेयर की जहां उन्हें विक्की, उनके माता-पिता - शाम कौशल और वीना कौशल, सनी कौशल और उनकी बहन इसाबेल कैफ के साथ देखा जा सकता है। यह एक परफेक्ट फैमिली फोटोग्राफ थी। हालांकि लोगों ने हर तस्वीर में एक बात नोटिस की वो ये कि कटरीना हर फोटो में किसी न किसी के पीछे खड़ी थीं। एक यूजर ने तो साफ लिखा कि कटरीना जानबूझकर ऐसे एंगल पर खड़ी थीं कि उनका बेबी बंप नजर नहीं आए।

गाना रब्बा जानता हुआ रिलीज, सिद्धार्थ और रश्मिका की दिखी हॉट केमिस्ट्री

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। फिल्म मिशन मजनू का नया गाना रब्बा जानता रिलीज हो गया है। इसमें सिद्धार्थ मल्होत्रा और रश्मिका मंदाना का दिलचस्प केमिस्ट्री देखने को मिल रही है। गाने की वीडियो को रश्मिका मंदाना ने सोशल मीडिया पर शेयर की है। इसके साथ उन्होंने लिखा है, 'रब्बा जानता अब आपका हुआ।' उन्होंने इसे कई लोगों को टैग भी किया है। रश्मिका मंदाना की पोस्ट को 1 घंटे में 3 लाख 28 हजार से ज्यादा लाइक्स मिल चुके हैं। वहीं इस पर 22 सौ के लगभग कमेंट किए गए हैं। रश्मिका मंदाना गाने में एक अंधी लड़की की भूमिका में है। वहीं सिद्धार्थ मल्होत्रा उन्हें प्यार करते नजर आ रहे हैं। इसके पहले फिल्म के कई पोस्टर भी जारी किए गए हैं। सिद्धार्थ मल्होत्रा ने इस गाने को निर्माता को सुनाया था, जब निर्माता ने पहली बार इस गाने को सुना था, तभी से वे प्यार कर बैठे। उन्होंने यह भी सोचा कि इस फिल्म के लिए गाना बहुत अच्छा है और इसे तारीक और नसरीन की लव स्टोरी पर फिल्माया जाएगा। इसके बाद इस गाने को फिल्म में लिया गया। यह पहली बार है जब सिद्धार्थ मल्होत्रा और रश्मिका मंदाना एक साथ काम कर रहे है। गौरतलब है कि फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा तारीक की भूमिका निभा रहे हैं। वहीं, रश्मिका मंदाना नसरीन की भूमिका में हैं। फिल्म के कई पोस्टर जारी किए गए है। मिशन मजनू ओटीटी प्लेटफार्म पर 20 जनवरी को रिलीज हो रही है। इस फिल्म का निर्देशन शांतनु बागची ने किया है। दिल्ली के इंडिया गेट पर फिल्म का ट्रेलर जारी किया गया था। फिल्म में सिद्धार्थ मल्होत्रा एक जासूस की भूमिका निभा रहे हैं जो कि पाकिस्तान में रहकर कई अहम जानकारियां भारत पहुंचाते हैं।

शादी के बाद आलिया-रणबीर ने ऐसा मनाया पहला क्रिसमस एक्टर ने यू लुटाया प्यार

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। 25 दिसंबर को दुनियाभर में क्रिसमस का जश्न मनाया गया। ऐसे में हमारे बॉलीवुड सेलिब्रिटी भी क्रिसमस के जश्न में डूबे नजर आए। बॉलीवुड का फेवरेट कपल आलिया भट्ट और रणबीर कपूर ने भी इस खास दिन को बेहद स्पेशल अंदाज में सेलिब्रेट किया। एक्ट्रेस ने अपने इंस्टाग्राम पर कुछ तस्वीरे शेयर की है जिसमे वह पति रणबीर और पूरे कपूर खानदान के साथ नजर आ रही हैं। ये क्रिसमस इस कपल के लिए कई मायनों में खास रहा। इस साल दोनों ने शादी की और पेरेंट्स भी बने। आलिया इन तस्वीरों को शेयर करते हुए लिखा, यह साल का सबसे अच्छा वक्त है, दुनिया के सबसे अच्छे लोगों के साथ। मेरे परिवार की तरफ से आपके परिवार को मैरी क्रिसमस। इस फोटो में रणबीर कपूर और आलिया भट्ट एक दूसरे के प्यार लुटाते नजर आ रहे हैं। तस्वीरों में आलिया भट्ट को रेड क्रिसमस स्पेशल हेयर बैंड और खूबसूरत रेड ड्रेस में नजर आ रही हैं। इस फोटो में आलिया बहन शाहीन भट्ट के साथ पोज देती नजर आ रही हैं। शनिवार रात आलिया ने क्रिसमस की शुरुआत अपने घर से ही की थी। उनकी बहन शाहीन और मां सोनी ने घर पर ही शानदार पार्टी का आयोजन किया था, जिसमे पूरा भट्ट और कपूर परिवार शामिल हुआ। आलिया भट्ट के अलावा एक्ट्रेस नीतू ने भी क्रिसमस सेलिब्रेशन की खास पोस्ट शेयर की थी, जिसमे रणबीर कपूर से लेकर, आलिया भट्ट, शाहीन भट्ट, पूजा भट्ट, अयान मुखर्जी, और सोनी राजदान सभी नजर आ रहे हैं। पूजा भट्ट का लुक पहले से काफी बदला हुआ नजर आ रहा है। क्रिसमस के खास मौके पर कुणाल कपूर ने लंच पार्टी होस्ट की, जिसमें रणबीर कपूर और आलिया भट्ट समेत पूरा कपूर परिवार शामिल हुआ। आलिया भट्ट की इस फोटो में पूरा कपूर खानदान नजर आ रहा है। एक्टर रणधीर कपूर-करिश्मा कपूर भी नजर आ रहे हैं। आलिया ने लंच पार्टी में शामिल होने के लिए व्हाइट और रेड प्रिंटेड फ्रॉक पहने हुए नजर आईं थी।

कंट्रोवर्सी के बीच रणवीर सिंह के साथ छुट्टियां मनाने निकलीं दीपिका पादुकोण

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। दीपिका पादुकोण इन दिनों 'पठान' फिल्म को लेकर हो रही कंट्रोवर्सी की वजह से सुर्खियों में बनी हुईं हैं। फिल्म के गाने 'बेशर्म रंग' में दिखाए गए दीपिका के डांस और भगवा बिकिनी में शाह रुख खान के साथ उनका रोमांस कई लोगों को पसंद नहीं आया। फिल्म को बॉयकॉट करने की मांग तेज है। उधर, रणवीर सिंह की हालिया रिलीज फिल्म 'सर्कस' भी क्रिटिक्स और आम जनता को पसंद नहीं आ रही। फिल्म को रिलीज हुए दो दिन बीत चुके हैं और इन दो दिनों में यह मूवी 15 करोड़ का आंकड़ा भी पार नहीं कर पाई। दोनों ही फिल्मों को कई मायनों में क्रिटिसाइज किया जा रहा है, लेकिन दीपिका और रणवीर को इन आलोचनाओं से फर्क नहीं पड़ता। कम से कम उनका लेटेस्ट वीडियो तो यही कह रहा है। बॉलीवुड स्टार दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह हाल ही में क्रिसमस और न्यू ईयर की छुट्टियां बिताने अपने अलीबाग वाले घर के लिए निकले। वेकेशन पर जाने से पहले उनकी कुछ तस्वीरें सामने आईं हैं। दोनों जेट के जरिये अलीबाग में छुट्टियां मनाने के लिए निकल पड़े। रणवीर सिंह और दीपिका पादुकोण की एक झलक पाने के लिए लोगों की भीड़ लग गई। कई लोग उनके साथ सेल्फी लेना चाहते थे, लेकिन अपनी ही धुन में मस्त दोनों एक दूसरे का हाम थामे जेट से गेटवे ऑफ इंडिया की तरफ जाते देखे गए। इसका वीडियो भी सामने आया है, जो कि तेजी से वायरल हो रहा है। फैंस दीपिका के फैशन सेंस की भी तारीफ कर रहे हैं, जो कि व्हाइट ट्रैक पैंट और टी-शर्ट में नजर आ रहीं हैं। दीपिका पादुकोण और रणवीर सिंह की प्रोफेशनल लाइफ की बात करें, तो यह दोनों एक्टर्स अगले साल और भी फिल्मों का पिटारा लेकर आने वाले हैं। दीपिका की 'पठान' और 'जवान' 2023 में रिलीज हो रही है। फिल्म पठान 25 जनवरी, तो 'जवान' को दो जून को रिलीज किया जाएगा। दोनों ही फिल्मों में शाह रुख खान उनके हीरो हैं। वहीं, 'सर्कस' के बाद रणवीर सिंह धर्मा प्रोडक्शन्स के बैनर तले बनने वाली फिल्म 'रॉकी और रानी की प्रेम कहानी' में नजर आएंगे।

सैफ अली खान ने करीना के लिए बजाया गिटार

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। करीना कपूर खान 18 दिसंबर 2022 को अपने पति सैफ अली खान और दोनों बेटों तैमूर-जेह के साथ वेकेशन के लिए रवाना हुई थी। पटौदी परिवार को मुंबई एयरपोर्ट पर स्पॉट किया गया था। करीना अपने परिवार के साथ इन दिनों लंदन में हैं। हाल ही में उन्होंने बेटे तैमूर अली खान का बर्थडे सेलिब्रेट किया था। तो वहीं अब परिवार एक साथ क्रिसमस मनाती नजर आई। इंस्टाग्राम पर करीना ने पति सैफ का एक वीडियो साझा किया है जिसमे सैफ गिटार बजाते नजर आ रहे हैं। इस कपल के वर्कफ्रंट की बात करें तो, करीना कपूर खान के पास बहुत सारे प्रोजेक्ट हैं। 'द डिवोशन ऑफ सस्पेक्ट एक्स' में नजर वाली है, जिसमें विजय वर्मा और जयदीप अहलावत भी हैं। उन्होंने हंसल मेहता द्वारा डायरेक्टेड एक दिलचस्प थ्रिलर फिल्म की शूटिंग भी पूरी कर ली है।

अब्दु रोजिक की इस हरकत से टूट गया निमृत का दिल अंकित के जाते ही घर में आया क्यूट सा नया सदस्य

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस 16 का वीकेंड का वार में इस बार काफी हाई ऑक्टेन ड्रामा देखने को मिला। एक तरफ तो सारे घरवालों ने मिलकर अंकित गुप्ता को शो से बाहर निकाल दिया तो दूसरी तरफ सबके प्यारे कंटेस्टेंट अब्दु की शो में वापसी हुई है। इसके साथ ही एक ट्विस्ट और है। बिग बॉस ने घरवालों को एक स्पेशल तोहफा दिया है। एक ऐसा तोहफा जिसे देखकर अब्दु सहित सभी घरवालों के चेहरे खिल गए। तो सबसे पहले बात अब्दु की, जैसे ही घर में उनकी एंट्री हुई निमृत कौर आहलूवालिया ने दौड़ कर अब्दु को गले लगा लिया। ब्रो साजिद ने तो अब्दु को गोद में ही उठा लिया। लेकिन इन सबको छोड़ अब्दु, शिव ठाकरे से मिलकर सबसे ज्यादा खुश नजर आए। अब्दु, शिव को सबसे अलग लेकर गए और साजिद, निमृत सोच में पड़ गए कि आखिर हमने ऐसा गलत क्या कर दिया। रात के एपिसोड में निमृत, श्रीजिता डे को बताएंगी कि उसे अब्दु की वापसी के बाद उनसे काफी कोल्ड रिएक्शन मिल रहे हैं। बता दें कि पिछले हफ्ते ही अब्दु ने सलमान खान के सामने माना था कि उन्हें निमृत से प्यार हुआ था पर अब वो दोनों दोस्त हैं। हालांकि जब से अब्दु लौटे हैं निमृत को लगता है कि उन्होंने अपना अच्छा दोस्त खो दिया है। कुछ ऐसा ही हाल साजिद का भी है उन्हें भी नहीं समझ आ रहा कि अब्दु उनके साथ ऐसा क्यों कर रहे हैं। हालांकि इस सैड स्टोरी के साथ बिग बॉस ने सरप्राइज देकर घरवालों का मूड फ्रेश कर दिया। बिग बॉस ने घरवालों से पूछा, 'घर का खाना' कौन-कौन मिस करता है, सब हाथ उठाते हैं। बीबी ने जवाब दिया कि उन्हें घर से कुछ नहीं मिलेगा। बिग बॉस ने फिर पूछा कि कौन अपने पालतू जानवरों को मिस करता है, सभी हाथ उठाते हैं। बीबी कहती हैं चलो इस इच्छा को पूरा करते हैं। घर में एक कुत्ता (सेट बर्नार्ड) है। बिग बॉस कहते हैं, वह घर में एक नई सदस्य हैं, उनका नाम महीन है।

विकास मनकतला की हरकत पर गुस्से से तिलमिलाए बिग बॉस, लिविंग एरिया में बुलाकर दी इतनी बड़ी सजा

(आधुनिक समाचार सेवा)

नई दिल्ली। बिग बॉस 16 में हर दिन कोई न कोई ट्विस्ट देखने को मिलता है। कभी दोस्तों के बीच लड़ाई हो जाती है, तो कभी अच्छी बनने वालों के बीच आपसी मतभेद आने लगते हैं। बीते दिनों गजब का ट्विस्ट देखने को मिला, जब घरवालों की वोटिंग से अंकित गुप्ता बाहर हो गए। अंकित के जाने के बाद विकास मनकतला ने अपना गेम शुरू किया। उन्होंने एक-एक कर अर्चना गौतम और प्रियंका चाहर चौधरी को साजिद खान और शिव ठाकरे के खिलाफ भड़काना शुरू कर दिया। उन्होंने प्रियंका को बताया कि अंकित के बाहर निकलने के बाद साजिद ने उन्हें (प्रियंका) को नॉमिनेट करने की प्लानिंग की है। हालांकि, प्रियंका को इस बात से फर्क नहीं पड़ता दिखा। कभी एक दूसरे पर मर मिटने वाले टीना दत्ता और शालीन भनोट अब एक दूसरे से ठीक से बात तक नहीं करते और मौका मिलते ही एक दूसरे की चुगली करना भी शुरू कर देते हैं। लेटेस्ट एपिसोड में टीना दत्ता ने एमसी स्टैन से शालीन की जमकर बुराई की। उन पर सहानुभूति लेकर गेम खेलने का आरोप लगाया। इधर टीना ने स्टैन को शालीन के खिलाफ भड़काया। उधर, विकास मनकतला ने शिव के बारे में अर्चना और प्रियंका को भड़काना शुरू कर दिया। विकास ने अर्चना को बताया कि शिव ने बिग बॉस मराठी में एक कंटेस्टेंट को काट लिया था। यह सुनते ही अर्चना हैरान हो जातीं हैं। यही बात उन्होंने प्रियंका को बताई, जिनका रिएक्शन अर्चना की ही तरह हैरानी भरा होता है। अर्चना ने जब इस बारे में शिव से बात की तो वह खुद अपने बारे में यह सच सुनकर हैरान हो गए। इसके बाद उन्होंने सफाई देकर क्लियर करना चाहा कि उन्होंने किसी को काटा नहीं था, बल्कि गला पकड़ा था। तभी बिग बॉस ने शिव से कहा कि किसी को भी सफाई देने की जरूरत नहीं है। बिग बॉस ने सभी लिविंग एरिया में बुलाया और विकास मनकतला को जोरदार फटकार लगाई।

स्वत्वाधिकारी एवं मुद्रक
डा0 दीपक अरोरा द्वारा
रामा प्रिन्टर्स 53/25/1 ए
बेली रोड न्यू कटरा प्रयागराज
(उ.प्र.) 211002 से मुद्रित
एवं सी-41 यूपी एसआईडीसी
औद्योगिक क्षेत्र नैनी प्रयागराज।
(उ.प्र.) 211010 से प्रकाशित।
सम्पादक/प्रकाशक
डा0 पुनीत अरोरा
मो0न0 09415608710
RNI No. UPHIN/2015/63398
website:www.adhuniksamachar.com

नोटः- इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद इलाहाबाद न्यायालय के अधीन ही होगे।